इंदु प्रभा

(छांदस रचनाएं)

लेखक

सुरेश चौधरी 'इंदु'

शुक्तिका प्रकाशन

इंदु प्रभा

(Indu Prabha)

ISBN : 978-93-94660-82-3

प्रकाशक :

शुक्तिका प्रकाशन

स्वामित्व : ए एंड ए इंटरप्राईजेज

पी 516/4, बी.एल. साहा रोड

कोलकाता–700038

मो. : 8582965531

लेखक : **सुरेश चौधरी 'इंदु'**

प्रथम संस्करण : 2024

©सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : 250/–

संपादन : **मीतू कनोडिया**

शब्द सज्जा : परमानंद झा, मो. : 95550–21641

मुद्रक : मिश्का इन्फोटेक, कोलकाता

यह पुस्तक
वैवाहिक उत्सव की 45वीं
वर्षगांठ पर
जीवन संगिनी को समर्पित

हे जीवन सहगामिनी सखी मम हृदय कुञ्ज विहारिणी
सुरभि शीतानिल मत्त गयंदनी चपला चित्त हारिणी
हुआ आगमन तेरा जिस क्षण जीवन प्रकोष्ठ में मेरे
हर दिन मंगल प्रभाषित प्रगटे रस प्रेम सिक्त घनेरे

धन्य जीवन है, सुगम कर्म पथ है, संगी तुमसा पाकर
पुन: हर जन्म तुम्हें ही पाऊं, मैं इस धरा में आकर
शत वर्ष पर्यन्त व्योम पर रवि किरण देखो यही चाहूँगा
कुछ न दे पाऊं उपहार तुझे कुछ न शब्द दे पाऊँगा

काव्य कविता

अक्षर अक्षर अक्षत बन कर, लगी शब्द की रोली माथ।
छंद गीत संग अलंकृत कर, पूजन अर्चन वंदन मात।
कविता उत्सर्जित हो ऐसी, मात शारदा खुश हो जाय।
कवि कविता गायन प्रतिपादन, काव्य रूप निखर निखर जाय।

स्वकथ्य

प्रिय पाठकों,

हर्ष का विषय है कि मेरी नवीनतम पुस्तक **''इंदु-प्रभा''** आपके समक्ष प्रस्तुत है। यह मेरी 33वीं पुस्तक है, जो वर्षों के अनुभव, समर्पण और काव्य साधना का सजीव प्रमाण है। इस पुस्तक में संकलित छंद न केवल मेरे भावों का प्रकटीकरण हैं, बल्कि जीवन के विभिन्न आयामों और अनुभवों का भी संगम है।

छंद, मेरे लिए केवल एक काव्य रचना नहीं, बल्कि आत्मा की आवाज़ है। हर छंद में मैंने अपने जीवन की अनुभूतियों, विचारों और संघर्षों को शब्दों में ढालने का प्रयास किया है। इस पुस्तक में आप पाएंगे कि हर छंद में एक नई दृष्टि, एक नया संदेश और एक नया उत्साह छिपा है। मेरी यह कृति उन तमाम रचनाकारों को समर्पित है जो छंद को मात्र नियमों का पालन नहीं, बल्कि अपनी रचनात्मकता की अभिव्यक्ति का माध्यम मानते हैं।

जब मैं 28 या 26 मात्राओं की पंक्ति पर लिखता हूँ, तो लोग कहते हैं कि यह छंद नहीं है, बल्कि मुक्त छंद है। छंद की परिभाषा में लिखा गया है कि ''वाक्य में प्रयुक्त अक्षरों की संख्या, क्रम, मात्रा-गणना और यति-गति से संबंधित विशिष्ट नियमों से नियोजित पद्य रचना 'छंद' कहलाती है।'' छंदस् शब्द 'चद' धातु से बना है, जिसका धातुगत अर्थ है ''जो अपनी इच्छा से चलता है।'' इसी से 'स्वच्छंद' जैसे शब्द बने हैं। इसका एक अर्थ यह भी होता है 'आनंदित करना' या 'खुश करना'। यह आनंद वर्ण या मात्रा की नियमित संख्या के विन्यास से उत्पन्न होता है। इस प्रकार छंद की परिभाषा यह होगी कि ''वर्णों या मात्राओं के नियमित संख्या के विन्यास से यदि आनंद पैदा हो तो उसे छंद कहते हैं।''

इसलिए छंद की परिभाषा में अनुशासन से युक्त कोई भी काव्य आ सकता है। आचार्य संजीव सलिल के अनुसार, पिंगल द्वारा तय किए गए नियमों के अनुसार लिखी गई कविता 'छंद' कहलाती है। वर्णों की संख्या, क्रम, मात्रा, गति, यति आदि के आधार पर की गई रचना को छंद कहते हैं।

छंद का सर्वप्रथम उल्लेख 'ऋग्वेद' में मिलता है। जिस प्रकार गद्य का नियामक व्याकरण है, उसी प्रकार पद्य का 'छंद शास्त्र' है। छंदों की रचना और उनके गुण-अवगुण के अध्ययन को छंदशास्त्र कहते हैं। चूँकि आचार्य पिंगल द्वारा रचित 'छंद:शास्त्र' सबसे प्राचीन उपलब्ध ग्रंथ है, इसलिए इसे पिंगलशास्त्र भी कहा जाता है।

संस्कृत वाङ्मय में छंद को सामान्यत: लय बताने के लिए प्रयोग किया गया है। विशिष्ट अर्थों में छंद कविता या गीत में वर्णों की संख्या और स्थान से संबंधित नियमों को कहते हैं, जिनसे काव्य में लय और रंजकता आती है। छोटी-बड़ी ध्वनियां, लघु-गुरु उच्चारणों के क्रमों में, मात्रा बताती हैं और जब किसी काव्य रचना में ये एक व्यवस्था के साथ सामंजस्य प्राप्त करती हैं, तब उसे एक शास्त्रीय नाम दिया जाता है और यह छंद कहलाने लगता है। इस प्रकार की व्यवस्था में मात्रा या वर्णों की संख्या, विराम, गति, लय तथा तुक आदि के नियमों का पालन किया जाता है।

छंद लिखते समय मैंने यति, गति, लय, और तुक का विशेष ध्यान रखा है। यद्यपि मेरे कुछ छंद शास्त्रीय रूप से परिभाषित छंदों से भिन्न हो सकते हैं, परंतु मेरी दृष्टि में छंद की असली कसौटी उसकी गेयता और भावपूर्णता है। मेरा मानना है कि जब तक छंद में लय और भावों का संयोजन है, वह पूर्ण और सफल छंद है।

इस पुस्तक के माध्यम से मैंने जीवन के हर पहलू को छूने का प्रयास किया है-प्रकृति, प्रेम, भक्ति, संघर्ष, और समाज के विभिन्न रंगों को इन छंदों में समेटा है। मेरी आकांक्षा है कि ''इंदु-प्रभा'' के छंद आपके हृदय

को छू सकें और आपको उस आनंद की अनुभूति कराएं, जो मैंने इनकी रचना के समय अनुभव किया।

अंत में, मैं उन सभी पाठकों का आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने मेरे काव्य को सराहा और मुझे निरंतर लिखने के लिए प्रेरित किया। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ''इंदु-प्रभा'' आपके साहित्यिक स्वाद को तृप्त करेगी और आपकी काव्य यात्रा में एक नई ऊर्जा का संचार करेगी।

आपका,

सुरेश चौधरी 'इंदु'

(गणेश चतुर्थी संवत 2081)

भूमिका

आ. सुरेश चौधरी केवल एक नाम नहीं कवि साहित्यकार, लेखक, कहानीकार, निबंधकार, श्रेष्ठ वक्ता और भी बहुत कुछ क्या कहूं शब्द कम है, इतनी उपाधियां जुड़ी है। आज उन्हीं महान व्यक्तित्व के स्वामी आ. सुरेश जी की श्रेष्ठतम कृति काव्य संग्रह मैं पढ़ रही हूं। तल्लीनता से अनवरत एक से बढ़कर एक रचनाएं निःशब्द हूं। अभिभूत हूं। पढ़ते-पढ़ते यूं अहसास हुआ, भावनाओं के सागर में गोता लगा, तलाश! अनमोल दिव्य मोती! मुट्ठी में कैद उत्तम बीजों का अंकुरण, अंतस अनुभूतियों को अपनी सशक्त लेखनी से सभी के अंतर्मन को स्पंदित कर विमुग्ध कर देना ये क्षमता आप जैसे वरिष्ठ कवि में ही निहित है। अनेक विसंगतियों के वावजूद काव्य साधना में रत आपकी रचनाधर्मिता अप्रतिम है-

''सृष्टि नियंता जग रमण, विष्णु विष्णु गोविंद......''

वहीं एक ओर :

''लक्षित व्योम होम रक्षित नत, आदेशित स्वस्ति कामना'' - अद्भुत अनुपम!

''कालचक्र नहीं करता व्यक्ति विशेष को कदापि अनुग्रहित।''

सरसता, कोमलता, सहजता व संवेदना से भरपूर।

अपनी अर्धांगिनी को समर्पित-

साक्ष्य भाव पर प्रेम और श्रद्धा की अनोखी मिसाल,
चाहत की पराकाष्ठा
अर्जुन की तरह लक्ष्य साधना
पत्थर को तराशने की कूबत
सुंदर सी प्यारी मूर्ति का निर्माण!

दृढ़ संकल्प बन जीवन सफर में-

''**प्रीत लगी ईश से जीवन आराधन हुआ**''

पूर्ण समर्पण, अद्भुत शब्द संयोजन

''**अरुण अस्फुट व्योम सरोज सम, प्रीति सुरभित हो चली**''

''**तृषित शुक्तिका ज्यूं स्वाति बूंदों से**''

उत्कृष्ट सृजन-

सुख-दुख दो पहलू जीवन के, निरंतर बहती धारा.....

कवि कहते हैं-

''**स्थितप्रज्ञ नहीं मैं जीवन में चेतनता चाहता हूं।**''

सम्पूर्ण व्योम पर स्वर्णिम धूप, अभिव्यक्तियों का रवि, रवि की दिव्य उर्मि, भावों के उजागर होने की गूंज।

उत्कृष्ट लेखनी अनुपम, शब्दों से परे सरस गूढ़ अंतस को विकंपित करते सृजन का विस्तृत अलौकिक संसार......

''**शांत हो ले अधीर मन**''......

''**हो उन्नत संस्कार ध्वस्त अंहकार।**

मार्ग हो प्रशस्त अंतस हो चमत्कृत॥''

कवित्व और सहृदयता का विराट समन्वय, प्रेरणास्पद सृजन

लोक कल्याण की भावना लक्ष्य-सर्वहितों में संलग्न

साहित्य धारा में बहते संकल्पित मन की उलझनों से परे, अहसासों का पुलिंदा, प्रकृति से जुड़ाव......

''**यादें सुनहरी क्षितिज से जब जब आ टकराती है।**

इंद्रधनुष सी स्मृति जब मन में हलचल मचाती है॥''

...

सागर के निकट.....

साक्ष्य भाव.....

भाग-दौड़ जीवन की स्वीकृति, बाहें फैलाए राहें मंजिल की कदमों की आहट,

शूलों की चुभन दृष्टि पुष्पों पर शाश्वत सत्य से एक मुलाकात........

अज्ञात चेतना.......

''परिवर्तन अवश्यंभावी है जो था नहीं रहेगा जान ले।''

''धूप-छांव का खेल है दुनिया हार के बाद जीत अनिवार्य है।''

''अनुपम बंसत शानदार सृजन।''

शिशिर की रात्रि......

''क्यों शिशिर ऋतु मदन चंचल है,''....

संवेदना की अमृत धार हल पल नव विचारों के आयाम, खुद से लड़ते कभी सांत्वना देते एक नया सृजन नव कोंपल सी फूटी अंकुरित

वेदना के वृक्ष आनंद की चाह अजीब कशमकश और लेखन का स्वरूप.....

''कंपित हुई अवनि लोहित व्योम हुआ वारिद अश्रु बह उठे कंपित तन हुआ।''.....

''पावस में प्रेयषि
प्रिये आप विधु
स्नेह समर्पण''

और बहुत कुछ लिखना चाहती हूं। अंतहीन सिलसिला, अंतहीन लेखन, अप्रितम।

अथक अनवरत दौड़ कभी उमंग कभी मायूसी पर आशा की झिलमिलाती रोशनी....

घोर तिमिर में सुनहरी सूर्य की किरणें दीप्त जगत का हर कोना यूं ही पतझड़ में बसंत, अनोखा अहसास।

कण-कण को बांधती जीवंत करती हरियाली, चहचहाते पक्षी, हवाओं

का मधुर गायन, मौन अधर शब्दों में शून्यता पर भाव की चंचलता शिखर पर और बेहतरीन सृजन का जन्म कवि की कल्पना ऊंची उड़ान ऊपरी आडंबर से रिक्त दैवीय अनुकम्पा जैसै छूकर निकल गई।

साहित्य के इस मुकाम पर आपकी पहुंच अनंत बधाई। बस चलते जाना है, जहां तक नजरों की पहुंच।

आपकी लेखनी को नमन।

चंदा प्रहलादका

अनुक्रमणिका

1. वंदनाएं-प्रार्थनाएं-अर्चनाएं **14**

○ हे देव ○ माँ वाघेश्वरी के चरणों में ○ राम स्तुति ○ सनातन धर्म ध्वजा की वंदना ○ गुरु वंदना ○ सृष्टि रचियता को नमन ○ सूर्य वंदना-1 ○ सूर्य वंदना-2

2. अध्यात्म एवं धर्म **28**

○ आध्यात्मिक प्रार्थना ○ नित्य सत्ता के पोषक ○ गंगा की संध्या ○ तृषित शुक्तिका ज्यूँ स्वाति बूंदों से ○ तत्व ज्ञान तो स्वयं कृष्ण हैं ○ सांध्य अर्घ्य का समय हो चला ○ स्थितप्रज्ञ ○ क्या ही जीवन ○ वीराना है अन्तकाल ○ नववर्ष स्वागतम् ○ आकांक्षा प्रतिपादित होती ○ समग्रता ○ मैं जीवन दंड-विधान हूँ ○ भ्रम ○ पितृ पक्ष

3. देश प्रेम **49**

○ सेना दिवस पर एक रचना ○ रक्ताभ अम्बर है ○ गलवान घाटी के वीरों के प्रति ○ जयति प्रहारक अरि संहारक ○ अंगार उगलती कलम ○ राम मंदिर ○ CAA ○ भारत मेरा देश ○ हलाहल उष्मा को तजने ○ हिन्दी मेरा अभिमान ○ अंगार उगलती कलम ○ निसर्ग ○ भारत-दशा ○ क्या देश लाचार है?

4. उत्कंठा-वेदना 72

❍ न्याय ❍ कोरोना ❍ वेदना ❍ बिखर गए जीवन के तार ❍ शांत हो ले अधीर मन ❍ देह उत्पीड़न ❍ देह उत्पीड़न-2

5. प्रेरक कविताएं 82

❍ आकांक्षा ❍ आशावादी गीत ❍ सागर के निकट रहें तो ❍ एक रचना जीवन के सन्दर्भ में ❍ शब्द प्रेम, शब्द अनुराग ❍ हृदय के वातायन ❍ मुस्कराता चल ❍ आह जब सीमाएं पार कर ❍ देख असफलताएं ❍ गरज रहे जो ❍ प्रभा रश्मियाँ ❍ आस्था ❍ शुभ्र ज्योत्सना

6. प्रकृति-उत्सव 98

❍ अनुपम वसंत ❍ कुम्भ ❍ शरद पूर्णिमा पर विशेष ❍ प्रकृति चित्रण ❍ शिशिर की रात्रि ❍ शिशिर ऋतु ❍ बृज की धरा ❍ रात्रि विवरण ❍ प्रकृति की रमणीकता ❍ ग्रीष्म ऋतु के विभिन्न दृश्य ❍ अरुण जलज के आगमन ❍ अरुणिमा ❍ लोहित हुआ वारिद ❍ वर्षा ऋतु ❍ नूतन विहान ❍ अरुणोदय ❍ होली

7. शृंगार 121

❍ पावस में प्रेयषि ❍ प्रिये आप विधु ❍ इंद्रधनुषी स्मृतियाँ ❍ प्रेम समर्पण ❍ आतप के मध्यांतर में ❍ स्नेह समर्पण ❍ मंदिर झंकार हो तुम ❍ भ्रमर के गुंजन ❍ प्रिय ये रूप राशि

❖❋❖

वंदनाएं–
प्रार्थनाएं–अर्चनाएं

हे देव

हे देव सविता सांध्य अर्घ्य देने आया मन को कर विमल
दिवस का अवसान हुआ चाहता है नूतन अर्चन अविरल

गगन पर मेघ का अवमान हुआ चढ़े मेघ पर मेघ घुमड़
जीवन पृष्ठ की व्यथा कथा बतलाने को मेघ रहे उमड़
तम की गहन कालिमा वृहत फैल चुकी है रूठे देव ऋत
देकर प्रकाश कर दे इस गगनाच्छादित कलुष को अनावृत

ईश दे नूतन आवरण दे नूतन दुकूल परिवेश नवल
हे देव सविता सांध्य अर्घ्य देने आया मन को कर विमल

नव जीवन का होगा आगमन व्योम नाद का हर्ष होगा
सिंचित नवालम्ब होगा भावनाओं का उत्कर्ष होगा
नवल भानु द्युति लिए उदित होगा क्षितिज अरुणिमा छाएगी
ढोल बजा खुशियाँ मना 'इंदु' देह अंतिम अर्घ चढ़ाएगी

संसृति सम्मोहन से निःसृत जीव खिलायेगा आत्म कमल
हे देव सविता सांध्य अर्घ्य देने आया मन को कर विमल

माँ वाघेश्वरी के चरणों में

बुद्धि प्रदायनी, श्वेत हंस आरूढ, नमन कोकिल कादंबरी
वीणा कर शोभित, पद्मासन स्थित, नमन देवि श्वेताम्बरी
जड़ अंध तमस हरो, करो अंतस आलोकित, माँ ज्ञानदा
आरोग्य यश पा, त्रिदेव भी करें आराधना, माँ शारदा।

चतुर्भुजी सस्मित आनन, वेदधारिणी ज्ञान संचारिका
आदि शक्ति भय निवारणी, कुंद पुष्प मुक्ताहार धारिता
देवि जननी, ज्योतिर्मय निर्झरनी, वीणा पुस्तक धारिणी
ऐश्वर्य दायिनी, नमामि देवि, शुभ्र ज्ञान रश्मि प्रसारिणी।

माँ वागेश्वरी, वीणा वादिनी, दे दे वागर्थ, अभिधा दे
हे कादंबरी, कर अंतस परिष्कृत, विवेक मनीषिका दे
पीत वसना, पीत वर्ण मंडित, धरा इसमें प्रेम प्रीत भर
कर प्रज्ञा विभूषित मन हर्षित, सर्वांग नवल संचित कर।

शुभ्र ज्ञान उत्सर्जित कर चेतस कर धरा धी आलोक से
खोल संकुचित अर्गला वत्सला, माँ मंगला भूलोक से
नमस्तेतु माँ, श्वेत हंस आरूढा, कलुष तम हर, दे स्पर्श
नवल छंद को नव स्वर दे, मेरे गीत को दे नव उत्कर्ष।

राम स्तुति

गुण गहन दनुज वन कर दहन, श्री गोविन्द आनंद दाता
हे अविनाशी सकल गुण राशि, अनंत भगवंता अधिष्ठाता
रमा स्वामी यम त्रास हर्ता, भुवनाभिराम श्री हरि कर्ता
व्यक्तवामन अतिपावन विभो, प्राकट्य प्राकृत प्रवृति भर्ता

नीलोत्पल आभा श्यामवदन, राजीव लोचन अतिकृपाला
किंजल्क पीताज़्बर धार कर, शंख चक्र सारंग विशाला
कौमौद गदा भयावह धरे, कालिया अज दमन कंस हनन
हे करुणाधाम कर्षण कृष्ण, स्वामी आप दुष्ट दनुज दलन

पूर्ण ब्रह्म चराचर अविनाशि, ज्ञान स्वरूप परम हितैषी
इन्द्रियातीत गुण वृत्ति हरण, भक्तभक्ति प्रिय कामधेनु सी
दुर्घट विकट विपत्ति हरण प्रभु, राम राघव माधव बिहारी
'इन्दु' के रक्षक विश्व पालक, सुखद राघवेंद्र पाप हारी

दोहा :

सृष्टि नियन्ता जग रमण, विष्णु जिष्णु गोविन्द
पीताम्बर पट वरण कर, मधुकर श्याम मिलिन्द

सनातन धर्म ध्वजा की वंदना

(पञ्चचामर)

नमामि धर्म ज्योति वर्तिका नमामि हे ध्वजा
नमामि मातृ भूमि चण्ड सी प्रचण्ड की मृजा
विराट धर्म गान की बने ध्वजा विशेष हो
न शेष हो विशेष हो अशेष वेश देश हो
धरित्रि की पवित्र चारुता ध्वजा विहारिणी
नमो नमो ध्वजा सनातनी प्रभा प्रसारिणी
नमो नमो ध्वजा उड़े सनातनी सनातनी
प्रबोध बोध शोध हो प्रकल्प कल्प बांधनी
रुके नहीं झुके नहीं सुकेशरी सुभाषिणी
ऋचा प्रभात वेद सी लिए सुगीत धारिणी
न ताप में जले गले बड़े पयोधि उर्मि सा
रगों रगों उमंग सङ्ग हे नमामि धर्मिता
ध्वजा महान आन बान शान देश प्राण की
नमामि उच्च व्योम देखती निशान ज्ञान की
ध्वजा निषिद्ध द्वार द्वार तू हमें सँवारती
नमो नमामि पूजता तुझे उतार आरती

(लावणी)

जयति जयति वैदिक सिद्ध ध्वजा तेरी उतारूँ आरती
तेरी उतारूँ मैं आरती, ध्वज लहर लहर लहराए
उच्च गगन में भानु की भांति, केसरिया व्योम सजाएं
भगवा मन है भगवा तन है, भगवा आदर्श बनायें

लोहित रोहित मोहित दर्शन अम्बर क्षितिज संवारता
ले उदित भानु अनल शिखा का, प्रभास भगवा पुकारता
विश्वगुरु प्रगल्भ ज्ञान ज्योति, ऋषि मुनि प्रज्ञ जय भारती
जयति जयति वैदिक सिद्ध ध्वजा, तेरी उतारूँ आरती

रक्ताभ व्योम से अरुणाई, चक्षो सूर्य जायते कह
विश्व अंतरात्मा दृष्टा रवि, ध्वज शोभित श्रेष्ठ अनुग्रह
आर्यभूमि की गौरव गाथा, सर्वत्र ध्वज पखारती
जयति जयति वैदिक सिद्ध ध्वजा, तेरी उतारूँ आरती

लक्षित व्योम होम रक्षित नत, आदेशित स्वस्ति कामना
आदित्य मध्य स्वस्तिक मंडित, सर्वभौम सा महामना
विश्व शांति आरोग्य साधना, चिदाकाश ब्रह्म धारती
जयति जयति वैदिक सिद्ध ध्वजा, तेरी उतारूँ आरती

पावन ऋचाएँ कर समाहित, पवन वेग सा लहराए
सत्य सनातन संस्कृति दर्शन, जगत को प्रथम दिखलाए
वैदिक सत्य धर्म ध्वज वन्दन, अध्यात्म प्रज्ञा पखारती
जयति जयति वैदिक सिद्ध ध्वजा, तेरी उतारूँ आरती

गुरु वंदना
(हरिगीतिका छंद)

गुरुदेव के चरण कमल में अर्पित करूँ मेरा नमन

अज्ञान के इस तमस में अनजान सा मैं सृजन था
पाषाण की अनगढ़ शिला का मैं अनामी रुदन था
दे ज्ञान रूपी ज्योति स्वामी आपने गर्वित किया
हे नाथ आ काटा तराशा आपने सज्जित किया

आये प्रभा बन ज्ञान की ज्यूँ हो शरद का आगमन
गुरुदेव के चरण कमल में अर्पित करूँ मेरा नमन

जग ने दिखा लीला भयावह जब मुझे विचलित किया
तब धैर्य दे साहस दे स्वामी आपने हर्षित किया
मैं ग्रन्थ मीमांसा पढ़ा बूझे पिपासा ज्ञान की
आ आपने इस व्यथित अंतस की निराशा शांत की

सीखा पढ़ाया आपने जो पाठ वो करता मनन
गुरुदेव के चरण कमल में अर्पित करूँ मेरा नमन

इस भक्तिमय रस प्रेम की अनुपम सुधा पा तृप्त हूँ
ये सत्य परम प्रशांत पा अनुग्रहित और सशक्त हूँ
जब जटिल उद्वेलित हृदय था आपने साहस दिया
स्नेहिल सरित में स्नान कर के भक्ति गंगा पा लिया

इस ज्ञान गंगा में धुला जीवन बना सुंदर चमन
गुरुदेव के चरण कमल में अर्पित करूँ मेरा नमन

तन लालसा से ग्रषित था औ वासना ने था डसा
अवसाद के काले जलद से हृदय का नभ था पटा
सुन शांत स्वर को आपके इस तमस का परदा हटा
सर आपके हैं हस्त वरद समस्त यह कल्मष छटा

नभ मेघ आयी प्रीत वर्षा में बहे गुरुवर नयन
गुरुदेव के चरण कमल में अर्पित करूँ मेरा नमन

तड़पा बहुत मेरा हृदय किस विधि मिले प्रभु की कृपा
मेरी व्यथा अब क्या कहूँ कुछ भी न तुझसे है छिपा
गुरुदेव आ अंतस बसो दो हर्ष दुःखों को मिटा
आनंद सागर लें हिलोरे कष्ट था सारा कटा

बल 'इंदु' को दे मोह एवम् लालसा का हो दमन
गुरुदेव के चरण कमल में अर्पित करूँ मेरा नमन

सृष्टि रचियता को नमन

हे पालक विश्वरूप सृष्टि रचियता
समष्टि के निर्माता धृति संचयिता
काल के पोषक रूपक अधिष्ठाता
नमन तुझे वंदन तुझे हे विधाता
नूतन सृष्टि को रचायें हम
आओ शुभ मंगल गायें हम

नूतन विहान गगन अनुपम प्रभासित
परिरम्भ वलय कामना आकांक्षित
हुआ विराम अनंत अभिलाषाओं का
प्रतिफल यह पूर्ण हुई कामनाओं का
नव जीवन कलश सजाएं हम
आओ शुभ मंगल गायें हम

कामना रहे ज्यूँ अम्बर का उत्कर्ष
प्रसून उपवन के हर्षित देख हर्ष
चिर प्रतीक्षित दीपक जला इस वर्ष
हेम आभा सी आयी निलय सहर्ष
चाँदनी बना चमकाएं हम
आओ शुभ मंगल गायें हम

आदित्य निकेत का गगन गौरव है
पुष्पित कुंज लता मंडित सौरभ है
तुषार पल्लव पल्लव आच्छादित है
प्रीत पीयूष सरित मन आलोड़ित है
नयन प्रीत से हो जाएं हम
आओ शुभ मंगल गायें हम

सूर्य वंदना-1

हे देव दिवाकर कर दो शिशिर निशा काल का अंत
कर उज्ज्वल गहन गिरि कानन में श्यामल गगन पर्यंत
तमतोम को प्रकाश पुंज से परिष्कृत कर दे ईश
प्राची के महाद्वार से सप्ताश्व रथ लिए आ रविश

चेतन कर दो प्रभु भावनाओं के अथाह प्रवर को
शितानिल सहलाये कपोल अंतस क्षितिज गह्वर को
स्वप्न स्नेह के छूटे किरणों के चैतन्य कोष से
सुदूर किनारे देव देखे खोले नयन रोष से

प्रतिकर्षण चालित समीर छू लेगी हमें अन्यतम
मलयानिल सुरभि का अभिसार ले लूँ मध्यम मध्यम
प्रियतम सित प्रभा को आत्मसात करूँ तेरा होकर
आरम्भ से ही गोचर रह कर भी रहे प्रभु अगोचर

सूर्य वंदना-2

सूर्य तेज सम व्यापक, अविद्या ही काम बीज, सृष्टि के
सर्वप्रथम जग मध्य अंत था, वक्र या, नीचे दृष्टि के
सर्व भाव था, कर्म धार्य था, जीव भाव था, गगन तत्व
प्रकृति रूप था, भोग्य था, भोक्ता पदार्थ पूर्ण था, वह सत्व

आस्था के महापर्व छठ पूजा पर सूर्य की वंदना की जाती है। कहते हैं डूबते सूर्य को कोई नहीं पूजता पर इस पर्व में पहले डूबते सूर्य को पूजते हैं। यह प्रतीक है सूर्यास्त के बाद सूर्योदय का। आईये सूर्य की वंदना त्रिभंगी छंद में करें :-

सर्वभौम रुचिता, प्रभात शुचिता, उजास अंतस समाहिता
देव पूज्य सविता, मस्तक नमिता, सप्त अश्व प्रभा संचिता
नमो देव भाष्कर, नमो दिवाकर, नमस्तेतु जगत प्रभाकर
अदित्यप्रभामणि, विश्व शिरोमणि, नमस्तेतु जय भुवनेश्वर

रश्मि प्रभावन्तम, क्षितिज गुणान्तम, जगे सर्व बाधा हरणम
सहस्त्र नव किरणम, ऋतु संहारम, आतप तापः प्रभाशितम
नमो नमः पूषा, नमः प्रत्युषा, ज्योति पति दिनकर नमस्ते
जयति तमसहर्ता, जय सुख कर्ता, जय जय प्रभाकर नमस्ते

सप्त श्वेत तुरंग रथ आरूढ़, देव प्रभाकर नमन तुझे
कर मध्य श्वेत सरोज धारक, नाथ दिवाकर नमन तुझे
प्रचण्ड तेज पुंज तेजस्वी, कश्यप कुमार नमन तुझे
आदि देव हिरण्य रूप ब्रह्म, चेतस प्रसार नमन तुझे

लोहित रोहित स्यंदन आरूढ़, सर्वलोक हितकारी रवि
महापाप हारी जग रक्षक, चतुर्दिस द्युतिस तेजस छवि
त्रिगुण रूप त्रिगुणात्मक भास्कर, महावीर सूर्य पापहर
आयातेजपुंज वायु नभ रूप प्रभु, तेजोमय सूर्य तापहर

आया सा रक्त वर्ण ले, रक्त हार कुंडल लालित्य
एक चक्रधारी भानु भास, प्रणाम तुझे हे आदित्य
सर्व प्रकाशक सर्व प्रवर्तक, प्रभु सर्व कल्याणकारी
विश्वात्मा जीवात्मा कारक, इंदु अंतस अभय कारी

अदित्यस्त्रोत (स्वरचित)

उद्यात आतप अर्यमा प्रचंड प्रवीर प्रभुतहर्ता नमोनमः
मंदार मार्त्तण्ड अंशुमाली तमहर्ता दिनभर्ता नमोनमः
दिनेश दिवाकर दिनमणि दिनकर दिवस्पति नमोनमः
तपु तेजोराशि तिमिरहर तेज अंश त्विषांपति नमोनमः

हे हिरण्यगर्भ हिमध्न तमध्न शत्रुध्न यामिनिपत्तनम
नक्षत्रग्रह तारागणाधिपति विश्वभावन विश्वभासनम
तेजसमापि तेजस्वी तेजप्रताप तिमिरहर्ता द्वादशनम
ज्योर्तिगणानां दिनाधिपति जय ज्यभद्राय सहस्त्रांशम

अध्यात्म एवं धर्म

आध्यात्मिक प्रार्थना

सुंदरी सूरा और सुरभि सुख को शांत विराम देने को
चतुर्विंश्लेशणि वाणी को संयोजित विश्राम देने को
अंतर्मुखी प्रतिभा को निरन्तर नवल आयाम दे पाऊँ
हे ईश सामर्थ्य दीजिये जग परीक्षा उत्तीर्ण हो जाऊँ

मीमांसा विवेचना स्वतः प्रखर हो परिस्त्रवित हो जाए
प्रभो आत्म मनन कर हृदयंगम परीक्षा मुखरित हो जाए
गतिशील जीवन को समय चक्र से अनुबन्धित कर पाऊँ
हे ईश सामर्थ्य दीजिये जग परीक्षा उत्तीर्ण हो जाऊँ

कालचक्र नहीं करता व्यक्ति विशेष को कदापि अनुग्रहित
समय बोध तो नित्य लेता है परीक्षा जीवन संबंधित
परीक्षाएं देनी हैं जीवन समर में आ रीत निभाऊँ
हे ईश सामर्थ्य दीजिये जग परीक्षा उत्तीर्ण हो जाऊँ

जिजीविषा की लालसा और महत्वाकांक्षा निज मान की
जीवन कर्म को निर्धारित कर देता आहुति स्वाभिमान की
लक्ष्य दृष्टिगोचर हो तो सब परीक्षाएं सहज दे पाऊँ
हे ईश सामर्थ्य दीजिये जग परीक्षा उत्तीर्ण हो जाऊँ

मन कर्म वचन को कर संयमित हर सफलता मुझे देना
दृढ़ संकल्प बन जीवन समर में कुविचारों को हरा लेना
मानसिक उद्वेलन को शांत कर इंदु प्रणिधान में बैठाऊँ
हे ईश सामर्थ्य दीजिये जग परीक्षा उत्तीर्ण हो जाऊँ

नित्य सत्ता के पोषक

नित्य सत्ता के पोषक सत्य के उद्बोधक
ज्ञान स्वरूप कृपालु दया के हो तुम तोषक
कालगति परिपेक्ष्य में गत वर्ष का अवलोकन
अक्षरों सा ''अ'' क्षर बनने का रहा प्रलोभन

''अन्नेनैव जीवन्ति'' जीवन उद्देश्य रहा
आकांक्षा जन्य संताप ही भाव प्रेष्य रहा
कबीर की उलट बांसी को साधता मन था
मीरा के पद पर झूमता नाचता तन था

शिखर शिखर और साहित्याकाश का शिखर
नभ पर निकला था यह शशि चूमता तिमिरहर
मान सज़्मान की स्वर्ण बेला का उत्कर्ष
मंगल दायक आरम्भ हुआ यह शुभ वर्ष

वीतराग भाव रचित मन आदि शंकर हुआ
अध्यात्म जनित ज्ञान जीवन अज़्यंकर हुआ
चिदाकाश दर्शन उपनिषद बन साधन हुआ
प्रीत लगी ईश से जीवन आराधन हुआ

विश्व कीर्तिमान मनोकामना लिए लेखन
एक सहस्त्र भजनों का त्रिवर्षीय हुआ समापन
एक कीर्ति बिंदु उपनाम इंदु स्थापित हुआ
नभ को छूने की चाह नभ पर भासित हुआ

अध्यात्मिक लेखन विवेचन और युग दर्शन
मानद उपाधि से सज्जित हुआ साध्य जीवन
गुरु प्रसाद से धन्य यह आत्मा यह हुई देह
सत्संग के अवसर अनन्य मिले मिला नेह

चीर उत्तंग शिखर नवल क्षीर सरिता बहा
दृढ़ कर भाव हृदय के, बस आगे बढ़ता रहा
मान जीवन अलौकिक झरना अविरल बहा
डाल इंद्र धनुष रंग जीवन को मधुर बना

राष्ट्र उन्नति पथ अग्रसर विश्व गुरु की राह
शिखर पर महामानव का शंखनाद प्रवाह
अभिमद शीर्षस्थ न हो और न हो अनाचार
क्षेत्र क्षेत्रज्ञ का बने परस्पर सद्‌व्यवहार

रजनीश की पीठ सवार उच्चता का भान
चन्द्रयान की सफलता देश का था अभिमान
आदित्य एल-वन कीर्तिमान स्थापित करके
हर्षित भारत भारत जग में प्रसारित करके

प्रणिधान शांत अभ्यर्थना भाव प्रभुता का
संचित अधृति ईष्ट अभिगम भाव इशिता का
पुष्प वल्लरि सज्जित सुरभित भोर लिए वर्ष
नव दुकूल पहनने की चाह चिंतन उत्कर्ष

शांत चित्त जाह्नवी तट किया अर्पण तर्पण
सांध्य अर्घ का हेतु बना तुम्हारा समर्पण
मुक्ति बोध सङ्ग पावन रात्रि वर्षावसान
मेघ आच्छादित गगन नयन नीर थे प्रधान

आरुषि की प्रथम किरण बतलाती समर्पण
देह व्यष्टि तो प्रतीक है समिष्टि आत्म मिलन
दुर्दांत देह साधना मनोबल पराकाष्ठा
नव जीवन सकल मनोगत है प्रवीर आस्था

क्षण क्षण क्षरित तन आयुका कैसा दृश्यमान
पुनः देह पीडा निष्पादित चेतना का भान
प्रतिपल सम्प्रेषित वेदन युगात्मक जनप्रथा
रहा स्वध्याय शेष अशेष रचना हरि कथा

नव वर्ष दे कुछ ऐसा मनोबल बना रहे
प्रभो अध्यात्म स्वध्याय में वर्ष लगा रहे
कुछ प्रशांत शांत प्रज्ञान ज्ञान की समिधा हो
चिर प्रतीक्षित कार्य की पूर्णावधि संविधा हो

गंगा की संध्या

गंगा की पावन तरंग तरिणि सुता मादक उमंग
है ज्ञान दायिनी मोक्ष बोधिनी, विमल सुभग तरंग
कल कल नन्दित शिखर चुम्बित, उच्छल वेग अनन्त
हरिपद से निःसृत मुदित वन्दित, जय गङ्गे जय संत

यह अरुणिमा, यह क्षितिज लालिमा, यह जाह्नवी प्रवास
प्रफुल्लित तन उत्कर्ष, रोमांचित मन, मचलता श्वास
अरुष-पट से सजती इला, जल सघन घन निस्तब्ध सा
द्रूमदल की पांत से, व्युष सहभाव ज्यों उपलब्ध सा

चिन्ह परिणय सजा, धानी चुनड़ी ओढ़ ऊषा चली
बिम्ब प्रीत का बिखरा वो मन्दाकिनी मन को छली
अरुण-अस्फुट व्योम सरोज सम, प्रीति सुरभित हो चली
निहित कर संतुष्टि सभ्य प्रकृति सृजन-अंकुर बो चली

सौम्य अनुपम दिवाकर वारिद दर्शित उदित है जहाँ
सज्जित व्योम छटा शालार मेघाच्छादित है यहाँ
नील अम्बर है, श्वेत जल विहीन मेघ दर्शन कहाँ
आरोहण है स्वर्ग से हिम सुता जाह्नवी का कहाँ

देख यह अद्भुत छवि अद्भुत रचना रचनाकार की
लुभा रही हमें जलज प्रभाषित घटा इड़ा द्वार की
बना मेघ-तुलिका से विभिन्न आकृति गंग हार की
ह्रदय प्रफुल्लित देख दृश्यावली अद्वेत सार की

तृषित शुक्तिका ज्यूँ स्वाति बूंदों से

तृषित शुक्तिका ज्यूँ स्वाति बूँदों से निज तृष्णा मिटाती है
शुष्क धरा ज्यूँ पावस की बाट में पूर्ण वर्ष बिताती है
तेरा नाम संकीर्तन ही श्याम बेड़ा पार कराता है
मानो तेरी अंखिया गोविंद प्रेम सुधा रस पिलाती है

अंतस की विकृत अवस्था, चरमोत्कर्ष पर स्थित शांति
विह्वल मनोभावना का, अंतर्द्वंद पीड़ित भ्रान्ति
भ्रमित, अकिंचित, प्रणीत, रीत् अनिर्णीत कदाचित
क्षणों का समायोजन है, या एक दीर्घ स्वप्न शमित

रहस्यवाद की कथा का, चिदाकाश बना गुंजार
सत्य असत्य में डोलता, उद्दत मानसिक उद्गार
सोच ज़्या करूँ ज़्या न करूँ, असमर्थ मार्ग इंतज़ार
अथक थक गया जिजीविषा, की चाह में जीवन सार

स्वप्न वर्धक मनोहारी, आत्मसुधा मद फलहारी
उधार के स्वप्न ज़्या मिले, हुई बेबसी लाचारी
उत्पीड़न की उत्कंठा, कुंठित मन उद्वेलित तन
सर्व विदित लक्ष्य निर्धारित, कर शांत 'इंदु' अंतर्मन

तत्व ज्ञान तो स्वयं कृष्ण हैं

तत्व ज्ञान तो स्वयं कृष्ण हैं, तुम क्या समझाओगे उद्धव
प्रीत प्रेम की प्रतिमूर्ति कृष्ण, कैसे झुठलाओगे प्राभव

है जीवन का आधार कृष्ण, समस्त तत्वों का सार कृष्ण
श्रीधाम के कण-कण में बसा, यह उन्मुक्त नेह प्यार कृष्ण
वेद संचित ब्रह्म ज्ञान कृष्ण, तेजस सत्य आत्म स्थान कृष्ण
साम का तरंगित गान कृष्ण, है गीता का अभिमान कृष्ण

नेह नीर का समर्पण कृष्ण, है मन की ऊर्जा तो माधव
तत्व ज्ञान तो स्वयं कृष्ण हैं, तुम क्या समझाओगे उद्धव

देख सको तो देखो उद्धव, उजड़ी सूनी ब्रज गलियों को
रोते मुरझाए उपवन को, मुरझाई अधखिल कलियों को
अश्रुजल बहाती गैयों को, जड़वत इन ब्रजांगनाओं को
विरह अग्नि से खाक हुई जो, विरहणी गोप ललनाओं को

फिर भी तत्व ज्ञान देना हो, देखो कृष्ण प्रेम का वैभव
तत्व ज्ञान तो स्वयं कृष्ण हैं, तुम क्या समझाओगे उद्धव

क्यों झूठा ब्रह्म ज्ञान लाये, क्यों आश्वासन दिए जा रहे
अथर्व से पवित रास को तुम, झूठे ज्ञान से झुठला रहे
ओ निर्मोही जली को और, ब्रह्म ज्ञान से क्यों जला रहे
प्रेम प्रीत की मधुशाला में, पी ली मय फिर क्यों सता रहे

समस्त वेद उपनिषद पढ़ के, क्या मिलेगा केवल पराभव
तत्व ज्ञान तो स्वयं कृष्ण हैं, तुम क्या समझाओगे उद्धव

शांत तरंगें कालिंदी की, शांत हुआ शीतल समीर भी
शांत मधुवन की अठखेलियाँ, शांत बिलोना छाछ क्षीर भी
शांत कृष्ण बिन बंशी धुन भी, शांत हुए अब केकि कीर भी
शांत ग्वाल बाल का चहकना, शांत हैं जमना का नीर भी

हुआ शांत समस्त वृंदावन, तुम हो मनोहर धीर आर्जव
तत्व ज्ञान तो स्वयं कृष्ण हैं, तुम क्या समझाओगे उद्धव

देखो ये खग मृग जल थलचर, इनकी व्याकुलता को जानो
कृष्ण दरस की लगी टकटकी, इनकी आँखों में है मानो
देखो गौशाला में गुमसुम, गौमाता को तुम पहचानो
तुम ठहरे निर्गुण निर्मोही, पशुओं की पीड़ा क्या जानो

सीख सको तो सीख लो उधो, जीवन मोहन बिना न संभव
हमें ज्ञान की बात न समझा, रहते हृदय हमारे माधव
कहती विरहणी गोपिकाएं, हे केशव! आ पार लगा भव
तत्व ज्ञान तो स्वयं कृष्ण हैं, तुम क्या समझाओगे उद्धव

सांध्य अर्घ्य का समय हो चला

सांध्य अर्घ्य का समय हो चला, हरि स्वीकार मेरी याचना
संचित अधृति भाव इशिता ले, इष्ट अभिगम की कर प्रार्थना
प्रणिधान स्थिति में यह जीव है, शांत नमित करे अभ्यर्थना
प्रसून वल्लरि सज्जित सुरभित, नव भोर की स्वागत कल्पना।

नव दुकूल पहनना है मुझे, करना है पुनः नव हवन प्रभु
मुक्ति बोध संग पावस रात्रि, मेघ आच्छादित है गगन प्रभु
निश्चल अंतस भक्ति लीन है, ठाकुर तेरी करूँ अर्चना
प्रसून वल्लरि सज्जित सुरभित, नव भोर की स्वागत कल्पना।

शांत चित्त जाह्नवी तट खड़ा, देह करे है अर्पण तर्पण
आरुषि की प्रथम किरण कहती, सब कुछ स्वामी तुझे समर्पण
'इंदु' देह व्यष्टि प्रतीक कहे, समष्टि आत्मा में मिल सजना
प्रसून वल्लरि सज्जित सुरभित, नव भोर की स्वागत कल्पना।

स्थितप्रज्ञ

स्थितप्रज्ञ नहीं मैं जीवन में नव चेतनता चाहता हूँ
मन से स्मृति भ्रम का निराकरण कर एकाग्रता चाहता हूँ

मेरी कामनायें अतिशियोक्ति नहीं अंतस की पुकार है
इस चंचल चित्त की चंचलता का अनसुलझा उद्गार है
चपल कामनाओं को दे विराम मन की स्थिरता चाहता हूँ
स्थितप्रज्ञ नहीं मैं जीवन में नव चेतनता चाहता हूँ

जीवन के इस संग्राम में लड़ते लड़ते थक सा गया हूँ
संसार के विकट भँवर जाल रहस्य में उलझ सा गया हूँ
प्रभु तेरी गोद में कुछ पल गुजार दूँ करुणा चाहता हूँ
स्थितप्रज्ञ नहीं मैं जीवन में नव चेतनता चाहता हूँ

जय पराजय के द्वन्द में ऊपर नीचे झूलती यह देह
मानव झूल रहा है मंदिर के घण्टे सा न राग न स्नेह
इस तीव्र निनाद से बच गाम्भीर्य वरण करना चाहता हूँ
स्थितप्रज्ञ नहीं मैं जीवन में नव चेतनता चाहता हूँ

शोर इतना तीव्र है की देह तंत्रियाँ झकझोरने लगी हैं
बस इतनी कामना बची मात्र सरलता बोलने लगी है
स्थावर जंगम विवाद छोड़ सचेतन प्रसन्नता चाहता हूँ
स्थितप्रज्ञ नहीं मैं जीवन में नव चेतनता चाहता हूँ

क्या ही जीवन

उत्कृष्ट प्रेरणा का है बस, माप दंड मेरा जीवन
स्मृति पटल निष्कृष्ट विचार की, प्रताड़ना है यह जीवन
घुटन है और नागफनी के, शूल की चुभन है जीवन
कागज की नैया है मेरी, उफनती नदी है जीवन
डूबती तैरती तरणी है जीवन.......

गहन धुंध मस्तिष्क मध्य में, बिखर छाई जा रही है
मानो सुबह ही सूरजमुखी, मुरझाई जा रही है
समय की ठण्ड सङ्ग सिकुड़ कर, सभी विचार जम गए हैं
लौह प्रकोष्ठ में बंद विचार, निजता में बन्ध गए हैं
इस प्रकोष्ठ की ही कुंजी है जीवन.....

कोई इस कुंजी को ला दे, कोई स्वतंत्र करवा दे
खूब ऊपर खूब ऊपर ले, कुहासों में पहुंचा दे
कुहासों से भी ऊपर उड़ा, स्निग्ध शीत नील व्योम में
मिले प्रशांत आत्मीय जीवन, भावना के रोम रोम में
भावनाओं की पूंजी है जीवन......

वीराना है अन्तकाल

वीराना है अन्त काल, संदिग्ध है मार्ग
जन्म मरण की वेदना ज्यूँ डसे गरल नाग
छोड़ चला साथी बन्धु छुटे प्यार अनुराग
क्यूँ लिप्त तू मोह लोभ में, बना वीतराग।

नभ के जलद नदी संग जलधि में हैं आते
ये उड़ पुनः जलद में परिवर्तित हो जाते
आत्मा जल कण सी परिवर्तित होती रहती
जड़ है आत्मा, क्यूँ मृत्यु से तुम घबराते।

उड़ चली सोन चिरैया न जाने कौन देश
छोड़ गयी खाली पिंजरा रहा कुछ न शेष
माया है महा ठगनी रचे दिन रात द्वेष
'इंदु' कहे प्रभु आओ कृपा करो हरो क्लेश।

नववर्ष स्वागतम्

चेतस तत्व ब्रह्म का हूँ मैं, मैं कालजयी अनुयायी
कितनी आयु बची है मेरी, आत्म निरूपण सुखदायी
ओम नाद मंगल है मुझमें, परम ब्रह्म का अध्यायी
मैं शिव में शिव मुझमें देखो, कल्याणकारी पर्यायी

आत्मबल से प्रचण्ड ज्वाल ले, चिर नभ को बोल रहा हूँ
हर हर महादेव का रौरव, सकल सृष्टि तौल रहा हूँ
वेद ऋचा सा पावन मेरा, नित सांध्य अर्घ्य दे नाचूँ
चुन चुन दूँ आहुति अस्थि की, भस्म मल अभ्यंकर बांचूँ

नचिकेता का यक्ष प्रश्न मैं, उत्तर यम का मुझमें है
शिलालेख की टंकित गाथा, मन्धाता यश मुझमें है
भारत गौरव अक्षुण्ण रहे, आकांक्षा यह मुझमें है
नूतन कीर्तिमान गढ़ नाचूँ, कामना प्रबल मुझमें है

प्रणीत हवि वैदिक छवि माथे, आगमन नव्य सविता का
व्यर्थ भय व्यतीत काल का है, नवल वर्ष है सरिता सा
मैं काल मेरुदण्ड से खींच, स्वर्णिम भविष्य लाया हूँ
मंगल गा आरती उतारो, अन्तस् ब्रह्म सजाया हूँ

मैं इस पार हूँ उस पार हूँ, समय नहीं भरमाया है
जो कुछ छू दिया संकल्पों से, अंतर्मन से पाया है
हुँकार भरूँ व्यवधान समक्ष, जीत सतत निश्चित होगी
नवागंतुक रहे अधीनस्थ, कामना परिष्कृत होगी

गान सामवेद दृष्टि सारँग, क्षीर सागर शेष शैया
हेम आद्री श्री साक्षी निलय, मुझ पर कृपालु जग मैया
नवग्रह पोषित श्री हनुमन्त, नव वर्ष उर रहें दाता
शीर्ष शीश नमन प्रार्थना है, कृपा करें सदा विधाता

अंध तिमिर सा विगत था विगत, नवागत सुमधुर बनाओ
हर्षित माला सस्मित मणिये, शिंजनी पग पग बंधाओ
आशा के दीप जला द्वारे, स्वागत नवल वर्ष गाओ
प्रेम निकुंज में बैठ साथी, सुख रस रंजन हरखाओ

प्रचंड शिशिर के हिम कणों में, चुन चुन हीरक हारों को
पर्वत शिखर से हेम रेखा, उतर द्युतित श्रृंगारों को
नवल वर्ष की अद्भुत शोभा, अद्भुत नवल दृश्यावली है
ये छवि ये हवि चेतन मानस, तत्वमसि गाथावली है

ऐ नव वर्ष जीवन उत्कर्ष, हर्ष ही हर्ष तुम लाना
हर्ष अमहर्ष निष्कर्ष नहीं, उद्धर्ष प्रकर्ष बन जाना
अनपकर्ष हो विमर्श सहर्ष, संघर्ष न कदापि लाना
ओ आने वाले नवल वर्ष, नवल हर्ष भरपूर सजाना

आकांक्षा प्रतिपादित होती

आकांक्षा प्रतिपादित होती आस्था के तल पर शांति हेतु
कर्मबोध आस्था से बाधित होता नहीं यह जीवन सेतु
तिरोहित होती अभिलाषा, परिवर्तित होती शुभलक्ष्य है
जीवन परिचय तो संकेतात्मक बिंदु है बस प्राकट्य है

स्थावर प्रज्ञा आत्मशोधन को आधार करती प्रदान है
जीवन संकलन में उत्कृष्ट निकृष्ट विचार एवं ज्ञान है
परिचय होता नहीं आत्मा का, तथ्य तो नश्वर तन का है
आत्मा परमात्मा एकाकार हैं वरन् भ्रम बस मन का है

वारिद बूंदों को तृषित धरा अपरिचित है जल आपूर्ति को
सन्निकट जलधि के रहते हैं पर अभिलाषित तृष्णा पूर्ति को
उद्विग्न मन शांति से है अनभिज्ञ, हो प्रयास तो भ्रान्ति है
है क्रोधित मन को क्षान्ति, रोगी देह को अपरिचित कांति है

मेरा प्रभु मुझसे परिचित, नहीं आकांक्षा किसी परिचय की
आत्म-संतुष्टि है, अंतस शांत है, प्रेम आशा निश्चय की
नाथ सुप्रज्ञा का प्रवेश हो, दंभ अनीति खल न हो कतिपय
आनंद हो, उमंग हो, जीवन व विश्वास का हो समन्वय

समग्रता

छलकते अश्रुजल, छलकती मनोदशा की
छलकती वेदना, बदलती देह दुर्दशा की

यात्रा शून्य से प्रारंभ शून्य में समावेश की
धीर गंभीर हृदय उठते पनपते आवेश की

प्रज्ञान आत्मा से परमात्मा के मिलन की
यह विश्रांति है यह ही शांति है जीवन की

समय बहुत कम है मेरे पास काम ज्यादा
बांध न ले नियति को प्रारब्ध की मर्यादा

जिजीविषा का संकल्प है प्रणिधान मेरा
प्रफुल्लित सस्मित जीवन अभिमान मेरा

मैं जीवन दंड–विधान हूँ

मैं जीवन दंड-विधान हूँ, निज आत्म सम्मान हूँ, जगती का प्रतिकार हूँ
पतवार कमजोर है मेरी तो क्या प्रयत्न करूँ तो सागर उस पार हूँ
नहीं डरता झंझावात की धमकी से, जानता हूँ इनका मुख मोड़ना
सज़ा मिले जितनी भी मुझे, मैं गहरे नीर चीर लहरों का उपकार हूँ॥

मैं स्थावर प्रज्ञा से आत्म संशोधन करती जिंदगी का संरक्षण हूँ
जीवन संकलन में उत्कृष्ट निष्कृष्ट के होते विचारों का क्षरण हूँ
परिचय नहीं है कोई मेरी आत्मा का, ज्ञान तो होता नश्वर तन का
मैं आत्मा-परमात्मा को एकाकार कर जीवन सर्व विधान का भरण हूँ॥

दम घोंटती है सज़ा भी देती है यह अन्तविहीन रात्रि परत दर परत
अंतर्मन को झकझोरती है उठ अचकचा कर चौंकाती है खुरच खुरच
कितनी तनी हुई हैं लकीरें स्वतः हथेली ललाट पर चली जाती है
पुष्टि करती हुई ये गुनाह की सीकर बूंदें, बहती रहती हैं अनवरत॥

मैं स्वयं में जीवन जीना चाहता हूँ, नहीं समेटना अस्तित्व मुझमें
जीवन तो है एक सजा अनवरत गुनाह का हो प्रतिकार दायित्व मुझमें
सद्बुद्धि का प्रवेश हो, दंड, दंभ, अनीति, खल न कदापि हो इस जीवन में
आनंद हो, उमंग हो, आस्था व विश्वास का हो सदा अनादित्व मुझमें॥

भ्रम

भ्रामक परिस्थितियां और भ्रम का हुआ साम्राज्य
भ्रम ही ब्रह्म, ब्रह्म में भ्रम, समझ लो भ्रम है त्याज्य
भ्रम में ही जीते हम, भ्रम में ही है मरते हम
अंत से अनंत तक जीवन गति है भ्रम अविभाज्य।

भ्रम, पूत सपूत वृद्धावस्था का पालक होगा
भ्रम, धन संचय ही जीवन का परिचालक होगा
पत्नी हो सुशीला करे सेवा मान पतिधर्म
अनजान थे कि पत्नी कर्म गृहस्थी घालक होगा।

प्रकृति भ्रम चंचरि, मकरंद मध्य वासित पुष्प सम
जग मृगमरीचिका सा प्राकृतिक भ्रम का उपक्रम
श्रवण दर्शन भ्रम के प्रतिकार, समझो सत्य जान
व्रज्या उपसर्ग निसर्ग का, मन चंचला पाले भ्रम।

पितृ पक्ष

तू पूज्य ध्यानी दिव्य दृष्टा हो अमूर्त नमन करूँ
अति कांत तेजस्वी सदा पितृदेव मैं वन्दन करूँ ॥ 1 ॥

सप्तर्षियों मारीच दक्ष सुरेश नायक नाथ हो
हो कामना की पूर्ति भी पितृ देव वन्दन माथ हो ॥ 2 ॥

मनु आदि मुनि राजर्षि हिमकर भानु नायक नाथ हो
अम्बुधि सहित हर नीर में पितृ देव वन्दन साथ हो ॥ 3 ॥

नक्षत्र ग्रह अम्बर अनल अरु वायु नभ मंडल भरूँ
भूलोक के जो नाथ उन पितृ देव को वन्दन करूँ ॥ 4 ॥

देवर्षियों के जन्म दाता पूज्यनीय सब लोक में
अक्षय सुफल दाता नमन पितृ दो कृपा गोलोक से ॥ 5 ॥

कश्यप प्रजापति सोम योगेश्वर वरुण के रूप हो
स्थित देव तुम कर जोड़ वन्दन प्रार्थना तुम भूप हो ॥ 6 ॥

स्थित सात पितृगण सातलोकों में नमन हाँ आपको
मैं योग दृष्टा श्री स्वयंभू नमन ब्रह्मा आपको ॥ 7 ॥

हो सोम के आधार स्थापित योग पितृ तुम साध्य हो
पितृगण नमन सम्पूर्ण जगपति सोम तुम आराध्य हो ॥ 8 ॥

अग्निस्वरूपा अन्य सब पितृ देव अभिनंदन करूँ
सम्पूर्ण जग है अग्नि द्वारा सोममय वन्दन करूँ ॥ 9 ॥

स्थित तेज में या चन्द्रमा रवि अग्नि के सम रूप में
यह दृष्टिगोचर जग स्वरूपा योग ब्रह्मस्वरूप में
सम्पूर्ण पितरों को प्रणाम समस्त योगी पितृ तथा
भोजी स्वधा पितृ नमन है एकाग्र चित हो संग यथा ॥ 10 ॥

देश-प्रेम

सेना दिवस पर एक रचना

भारत के वीर सैन्य दल का, शौर्य दिखाने आया हूँ
तिमिर दूर करने ज्योति-कलश, आज सजाने लाया हूँ

देखो राणा का रण कौशल, वीर शिवा की चतुराई
कूट कूट कर भरी जिनमें, गुरु साहिब की अंगड़ाई
पद्मनी के जोहर की कसम, जिनके हृदय मे समाई
लक्ष्मी बाई से ले साहस, सेना भारत की आई

आज तुम्हें पुरखों की भूली, कथा बताने आया हूँ
तिमिर दूर करने ज्योति-कलश, आज सजाने लाया हूँ

सीमा पर प्राण वीर सैनिक, करते रहते न्योछावर
केशर घाटी हो करगिल हो या गलवान का हो असर
क्या क्या सुनाऊं कैसे कहूँ, लिखूं क्या क्या मनोद्गार
छोटी सी मेरी कलम बनी, घाव नाजुक हैं हज़ार

बलिदानी शहीद की स्मृति में, दीप जलाने आया हूँ
तिमिर दूर करने ज्योति-कलश, आज सजाने लाया हूँ

यह देश देख गीता का है, कर्म का होता प्रसार
देश हित युद्ध करो धर्म है, बताते हैं कृष्ण मुरार
सैन्य शक्ति आततायियों पर, बन दुर्गा करती प्रहार
सौ गलतियां क्षमा करें हम, फिर शिशुपाल का संहार

उठो उठाओ आत्म सम्मान, देश जगाने आया हूँ
तिमिर दूर करने ज्योति-कलश, आज सजाने लाया हूँ

रक्ताभ अम्बर है

रक्ताभ अम्बर है, चक्षु रक्तकण टपका रहे
लोग धर्मान्धता की अनल में देश जला रहे

सहिष्णुता, सौहार्द्र मात्र एकतरफा तो नहीं
किसी को लाखों दिए किसी को धता बता रहे

कैसी ये राजनीति जो समाज तोड़ने लगी
कैसे ये साहित्य कार जो सम्मान लौटा रहे

साहित्य सम्मान मिलता साहित्य सेवा हेतु
लौटा पुरष्कार साहित्य को कमतर बना रहे

विचार धाराओं का ये खेल निराला देखो
अपनी सोच थोपने को ये सबको डरा रहे

जिस लेखनी ने मात्र देखी देश की दुर्दशा
वो देश को खुशहाली की कला सीखा रहे

खुद ने दिया खुद ने लिया कैसी बात निराली
खुद ही लौटा दूजे को क्यूँ ये बद बना रहे

गलवान घाटी के वीरों के प्रति

गलवान घाटी में भारतीय वीरों ने 42 दुश्मन सैनिक मार गिराए थे। उनके शौर्य को इन शब्दों में लिखा था :-

एक बार फिर घर की खिड़कियों से दानवों ने छिप छिप वार किया
एक बार फिर से सिंहों ने दे बलिदान दैत्यों का संहार किया

शर्म से मस्तक झुक जाता था जब सर हीन वीभत्स शव आते थे
सियाल भी आ आ सिंहों को दबोचने का साहस कर जाते थे

अब हम वह नहीं हैं जब दृढ़ शक्ति दिखलाने को आह निकलती थी
कब नर केहरि बनेंगे सोच लज्जित हो हमारी राह बदलती थी

शीत समर में सैन्य-दल आग्नेय शस्त्र यदा कदा ही उठाते हैं
घाटी में छुपे सियाल पीठ पर रक्त रंजीत खंजर चुभा जाते हैं

पवित्र ऋषि घाटियों में चला ब्रह्मास्त्र हम शौर्य दिखा सकते हैं
इच्छा शक्ति हमारी इतनी गाजर सा काट बिखरा सकते हैं

हिम गिरी पर लहू हमारा हिम नहीं है यह पुनः ऊष्णित हुआ है
धर्मयुद्ध में सुरक्षा हेतु अर्जुन ले गांडीव सज्जित हुआ है

कुछ ऐसा करो विश्व देख भारत की वीरता चमत्कृत हो जाय
क्रूर दृष्टि दुश्मन भी देख-देख हमारा शौर्य, भयभीत हो जाय

जयति प्रहारक अरि संहारक

जो शीश कभी न झुका राजनीति में उस शीश को नमन करूँ
जो जीवन बिता दहके अंगारों में उस जीवन का वन्दन करूँ
आर्यावृत की सच्ची परज़्परा के साधक का अभिनन्दन करूँ
देवभूमि के प्रलयंकर तू अभयंकर पुष्प अर्चन अर्पण करूँ

मेरी शान मेरी आन, मेरी जान अर्पण तुझ पर करूं
मातृभूमि हेतु दिए प्राण सर्व समर्पण तुझ पर करूँ
वीर मेरे सेनानियों सर्वत्र तेरा वंदन होगा
जयति प्रहारक अरि संहारक तेरा अभिनंदन होगा

केसर क्यारी क्यूँ रक्त रंजित हुई क्यूँ अम्बर अंगार हुआ
क्यूँ शत्रु कमजोर मान रहा लहु का क्यूँ अम्बार हुआ
वार करो अरिदल पर वर्जन हो उनका क्रंदन होगा
जयति प्रहारक अरि संहारक तेरा अभिनंदन होगा

चेतक की टाप कहूँ प्रताप के भाले की बात कहूँ
या मर रहे शहीदों के बलिदान की मर्मांत घात कहूँ
चंदबरदाई, भूषण के गीत का पुनः मंथन होगा
जयति प्रहारक अरि संहारक तेरा अभिनंदन होगा

उर के अंगार लिखूं सीमा पर शहीदों के प्राण लिखूं
छोटी सी कलम हैं घाव गंभीर बस व्यथित सार लिखूं
घायल मनोद्‌गार का कैसा उद्भव प्रबंधन होगा
जयति प्रहारक अरि संहारक तेरा अभिनंदन होगा

रक्ताभ नभ पर आक्रोशित चेतना का अब रण होगा
अब बातें नहीं समर होगा अवनी संघर्ष भीषण होगा
अरि शमन होगा केसर क्यारी पर अब जागरण होगा
जयति प्रहारक अरि संहारक तेरा अभिनंदन होगा

एक नहीं दो नहीं चालीस शहीदों के लहू का तर्पण होगा
क्षत विक्षत हत शलथपथ गत अब आमरण मरण होगा
कश्मीर पूरा होगा तभी रोली चावल चंदन होगा
जयति प्रहारक अरि संहारक तेरा अभिनंदन होगा

बसंती बयार में तू आया बासंती बाना ओढ़
छोड़ मधुमास छोड़ भ्रू विलासप्यास शिशु नवजात छोड़
लक्ष्य अति विकट दूर देश संकट जीवन तर्पण होगा
जयति प्रहारक अरि संहारक तेरा अभिनंदन होगा

मेहंदी फीकी भी न हुई घातक चातक मार गया
बाट जोहती बहन की राखी को छली संहार गया
बहेलिया के बिछे जाल में खुद उसका मर्दन होगा
जयति प्रहारक अरि संहारक तेरा अभिनंदन होगा

माँ के अश्रु, पत्नी का क्रंदन, संतति का प्रलाप बचा
घर घर आक्रोश मचा, आंखों में शोणित आलाप बचा
पक्ष-विपक्ष रो रहा, भारत सारा तुझ पर अर्पण होगा
जयति प्रहारक अरि संहारक तेरा अभिनंदन होगा

अंगार उगलती कलम

अंगार उगलती कलम मेरी, देश गीत का मान है
ताकत है गोली से बढ़कर, बरछी तीर कमान है

चंद वरदाई बन समर में, जय दे पृथ्वीराज को
लिखकर भूषण साहस भरते, शिवाजी महाराज को
लिखती सुभद्रा की लेखनी, लक्ष्मी का गुणगान है
ताकत है गोली से बढ़कर, बरछी तीर कमान है

चंद्रबदन रंग रस श्रृंगार, लिख देखो मधुमास है
अलंकार उपमा से सज्जित, लिखा जो कालिदास है
नयन अश्रु बहा दे लेखनी, प्रीतम का अभिमान है
ताकत है गोली से बढ़कर, बरछी तीर कमान है

विशुद्ध भक्ति रस बरसता है, मीरा के रस गान में
अध्यात्म भक्ति की कलम बनी, तुलसी की पहचान में
सुर रसखान लिखें प्रभु महिमा, भारत की ये शान है
ताकत है गोली से बढ़कर, बरछी तीर कमान है

राम मंदिर

नगर नगर ग्राम ग्राम खुशियाँ, दीप लौ झिलमिलाती है
कौशलाधीश कौशल आये, अयोध्या अब बुलाती है
भव्य भवन भुवनेश्वर भाषित, भारत भावित भरमाते
शत कोटि आस्थाएं पुकारे, सौगंध राम की खाते

अंध जड़ित इस अमा निशा में, ज्योति पुंज वो लाया है
सघन गगन पर घन सा छाया, नवल उल्लास आया है
आलोकित है अवनी अम्बर, रवि रजनी में छाया है
ज्योर्तिपर्व दीप की वर्तिका, द्युति द्युलोक प्रच्छाया है

कोदंड की टंकार सुनाने, जब केशरी दल चला था
शोणित सनातनी राघव का, कलंक मिटाने मचला था
देव दीवाली दीप दहका, अरि छल लहका लहका था
राम सेवा में राम महका, हेमन्त में शरद बहका था

राम ध्वज राम भवन फहरा, हुतात्मा भक्त आये थे
याद करें राम काज को जो, अपने प्राण लुटाए थे
पूर्ण हुआ तीस बरस का तप, अब प्रत्यंचा चढ़ानी है
स्मारक राम शरद का भी हो, पुष्प श्रेष्ठ अभिमानी है

तिमिर की कलुष हुई असितता, को अब सित कर आई है
वैभव खोज पुरातन देखो, राम राज्य अगुआई है
हुई प्रतीक्षा समाप्त भारी, भव्य सदन की बारी है
राम नाम अभिराम जपो तुम, कृपालु अवध बिहारी है

29 फरवरी, 2020 पर लिखी रचना उस समय पूरा भारत CAA की आग में दहक रहा था

छप्पय :

आओ कटुता भूल, प्रेम शांति से रहें हम
आज दिन है विशेष, भूल जाएं सारे गम
यह दो हज़ार बीस, वर्ष शांति का मनाएं
भारत भूमि प्रसिद्ध, जगत गुरु इसे बनाएं
आती सदा वर्ष चार में, एक बार यह भोर है
कितनी प्यारी मन मोहती, तन को करे विभोर है

दोहा :

बहुत गरम क्यों चल रही, हवा देश में आज
क्यों अंगारे हाथ में, क्यों जल रहा समाज।।

राधेश्यामी छंद :

कब क्षितिज पर सांध्य संधि लिए, लालिमा का अंगार होगा
कब महि पर सौंधी महक लिए, पोषित हरित श्रृंगार होगा
कब कम होगी हृदय वेदना, मनुज को मनुज से प्यार होगा
छा रहीं घटायें काली हैं, कब शमा का दीदार होगा

मार्ग दुर्गम और तूफान है, लौ दीपक की टिमटिमा रही
भूल भुलैया में गुम हैं हम, हृदय वर्जना चरमरा रही
इस जीवन के अंतराल में, कुछ क्षण ऐसे भी आते हैं
पूरे गतिशील समय वृत को, मर्माहत ये कर जाते हैं

नव गीत

हिला भारत सिंहनाद करती धन्वा की टंकारों में
कस्बों गाँवों में शहरों में गलियों में बाज़ारों में
और घी पड़ता रहा अंगारों में, फिर दोषी कौन?
घर जलते रहे, बरसते रहे, बस्तियां उजड़ती रही
अदृश्य सी संस्कृति रोती रही, अस्मिता बिलखती रही
देश गर्विता का ढूंढ़ती जहाँ अस्तित्व किनारों में
और घी पड़ता रहा अंगारों में, फिर दोषी कौन?

ले संविधान का नाम कोई ले धर्म निज हाथों में
उतरे अस्त्र लिए हाथों में सड़कों में फुटपाथों में
पंथ मजहब स्वयं लड़ पड़े टकराव हुआ विचारों में
और घी पड़ता रहा अंगारों में, फिर दोषी कौन?

जहर इधर से भी घूला, जहर उधर से भी घूला
मानवता की मौत हुई दरबारे आम दर्द भूला
फिजां जहरीली हुई जहर घुला बासंती बहारों में
और घी पड़ता रहा अंगारों में, फिर दोषी कौन?

कोई समझता मैं सबसे बड़ा कोई सर्वोच्च खड़ा
कोई देश से बड़ा उसे दिखे नहीं कौन मरा पड़ा
यह स्वाभिमान युद्ध है अब तो जमीं और पहाड़ों में
और घी पड़ता रहा अंगारों में, फिर दोषी कौन?

सबको अपने बल का अभिमान है देश की न शान है
अफवाहों पर ध्यान है बहक बहक दे रहे ज्ञान हैं
निकल पड़े सब बुझे चरागों से लड़ने अंधियारों में
और घी पड़ता रहा अंगारों में, फिर दोषी कौन?

कवि उद्भट है जनता खड़ी मौन कवि की लाचारी है
मौन हैं-गौण-द्रोण सब ही कलम उसकी बेचारी है
ऐसे कमरों में बैठे आज़ादी मांग रहे नारों में
और घी पड़ता रहा अंगारों में, फिर दोषी कौन?

कहीं तो संघात है कोई कहे तुष्टिकरण हो रहा
मैं कहूँ राजनीति का यहाँ बाजारीकरण हो रहा
सस्ता खून हुआ धर्मयुद्ध उद्गार के गलियारों में
और घी पड़ता रहा अंगारों में, फिर दोषी कौन?

अशक्ति से आसक्ति, समाविष्ट से अंतर्विष्ट के मध्य
फलक पलक की झलक मिले मंडराते भृंग गुंजारों में
नाद उन्माद आल्हाद विलाप बहुरंग गल हारों में
और घी पड़ता रहा अंगारों में, फिर दोषी कौन?

सुन गरजने वाले धरा पर आसुरी प्रवृति दहकी थी
मौन रह धरा कांपी अंतरिक्ष शम्पाएं कड़की थी
चक्रधर ने गिन सौ गालियां सर काटा था हज़ारों में
और घी पड़ता रहा अंगारों में, फिर दोषी कौन?

नर बलि क्यूँ चढ़ा रहे कैसें दे बुद्धि इन बेचारों में
गांव शहर जला रहे हैं गिनो बुद्धि हीन लाचारों में
और घी पड़ता रहा अंगारों में, फिर दोषी कौन?

अंत में...

नमन, वंदन, अभिनन्दन मेरे गौरवशाली संविधान
अर्पण तर्पण समर्पण तुझे यह सांस्कृतिक शुद्ध प्रमाण
कपोत श्वेत उड़ाओ इन आग उगलती बयारों में
और न घी डालो इन अंगारों में
बनो न दोषी इन बहती धारों में

मही पादाधाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुज परिघरुग्णग्रहगण।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता॥

भारत मेरा देश

देव धरा यह है भारत की, इसे नमन वंदन है
उठा सहर्ष शीश लगाओ, इसकी रज चंदन है
यह भूमि है नंद नन्दन की, जनमें रघुनंदन है
जन गण मन गर्वित हर्षित है, तर्पण अभिनंदन है॥1॥

यहाँ स्वतः उत्कर्ष भावना, वितरंगित होती हैं
देह शिरा शोणित प्रवाह से, अति स्पंदित होती है
लककब करने हेतु चिंगारियां, खुद स्फुरित होती हैं
जब जब बाधाएं सीमा पर, प्रतिपादित होती हैं॥2॥

सुनी नहीं बलि कभी सिंहों की, क्यूँ निर्बल ही मरते
सिसकता मौन देख रहे चुप, गर्जन से क्यों डरते
देख नहीं सकता और अधिक, आहत राष्ट्र अस्मिता
स्याल व्याल के समक्ष देखो, आकर व्यर्थ चीखता॥3॥

खेल देखो ऐ सिंह पुत्र तुम, नाहक ख़ौफ़ न खाओ
निरीह पशु वत नहीं बनो तुम, अपना शौर्य दिखाओ
काले घन नभ के दूर हुए, अब है प्रभा देश मे
भारत सक्षम परिपक्व हुआ, आधुनिक परिवेश में॥4॥

आर्य भूमि के संवाहक तुम, मौन साधना छोड़ो
अपना राष्ट्र गौरव बढ़ाओ, धार गंग की मोड़ो
उठाये कदम बहुतेरे हैं, यह बताने आया हूँ
वेदना भुलाने आया हूँ, अब गर्जन लाया हूँ।।5।।

पुरखों की तेजस्विता तुम्हे, यूँ आज सुनानी है
कार्य प्रमुख अब कौन रह गए, यह बात बतानी है
राम सा राज धर्म निभाने, रीत अब चलानी है
वन्देमातरम धर्म मेरा, यह राष्ट्र निशानी है।।6।।

याद कर अस्सी घाव खाकर, राणा डटे रहे थे
मातृभूमि की रक्षा को वो, रण मे खड़े रहे थे
बाप्पा रावल का शौर्य कभी, क्या हम भुल पायेंगे
मेवाड़ी नारियों का कभी, जोहर भुल पायेंगे।।7।।

याद है गुरु गोविन्द जी के, सुतों का बलिदान भी
याद है राणा प्रताप जी का, मेवाड़ अभिमान भी
याद है शिवा जी की हुंकार, औ मराठा शान भी
याद है आल्हा उदल वाला, पराक्रम का गान भी।।8।।

याद हमें रानी हाडा के, शीश दान की बातें
याद हमें पन्ना धाय और, उसकी त्याग भरी बातें
याद हमें रानी झाँसी की, वीरता की कहानी
याद हमें रानी दुर्गावति, उसका शौर्य जुबानी।।9।।

आजाद भगत असफाकुल्ला, विस्मिल से बलि दानी
वीर सावरकर सुभाष तिलक, लालाजी कि कहानी
क्या क्या गिनवाएं भारत की, धरा तो भरी पड़ी है
वीरों के बलिदान से भूमि, भारत की अटी पड़ी है ॥10 ॥

राष्ट्रीय अस्मिता रक्षा को, कर अर्पित प्राण चले
सीमा पर कर अरि प्राणो को, शमित सैन्य त्रास फले
बलिदानी सैनिक खिलते ज्यूँ, हो पुष्प अरविंद का
कहते रहे वन्देमातरम, उद्घोष जय हिंद का ॥11 ॥

आज बात पूर्ण संकल्प की, फिर से दुहराना है
निकल पड़े हम चूमने गगन, नव राष्ट्र बनाना है
यह वसुंधरा हरित हो रही, सुरभि रचित बाना है
शांति दूत यश प्रभूत अद्भुत, तिरंगा लहराना है ॥12 ॥

हलाहल उष्मा को तजने

हे चंद्रशेखर अब तो बाहर आओ कैलाश से
कालकूट निकल रहा अब भारत प्रभास से
हलाहल उष्मा को तजने शीतलता पाने को
फिर से शशि धारण करना होगा ललाट पे

फन उठाये नाग यहाँ मार्ग पर कई पड़े हुए
कलयुगी दानव यहाँ अत्याचार पर अड़े हुए
राह राह पर व्यभिचार की हैं लपटें उठ रही
त्रसित मानव न्याय को क्रोधित खड़े हुए

नीलकंठ बन कर विष तुझे ही पीना होगा
अमिय रह जाये शेष कुछ ऐसा करना होगा
टकटकी लगाये खड़ी जनता अब आस से
हे चंद्रशेखर अब तो बाहर आओ कैलाश से

आज सतरंगी इन्द्रधनुषी स्मृति मन में सजाई
आज रजनी ने ला-लाकर शशिप्रभा आस बढाई
अब सुनहरी यादें जा-जाकर क्षितिज से टकराई
तब तब तिमिर के उठा वितान आशाएं थी आयी

हिन्दी मेरा अभिमान

अक्षर अक्षर को रोली बना नित्य लगाऊं अपने भाल
शब्दों की अत्युक्त वीणा या बजे हंसध्वनि लय की ताल
चतुरविश्लेषणी बोली या त्रिधार भाषा का ज्ञान कहो
हिन्दी सर्वोच्च शिखर बैठी संस्कृत तनुजा अभिमान कहो

निकली भारतेंदु कलम से आचार्य शुक्ल ने स्थापित किया
द्विवेदी की साधना छायावाद ने इसे शृंगारित किया
चारण बंधन की खोल अर्गलायें सुभद्रा ने मुक्त किया
हिमाद्रि तुंग के उच्च शिखर पर प्रसाद ने ध्वज युक्त किया

गति लय अलंकार विभूषित निराला की हिन्दी पूज्यनीय
पंत महादेवी के पुष्प से सुरभित भाषा मेरी महनीय
माखन की अभिलाषा हिन्दी बनी स्वाधीनता की भाषा
भाषाई सौंदर्य निबन्ध लालित्य राष्ट्रभाषा की आशा

दिनकर ने दिनकर बन हिन्दी को राष्ट्र में मान दिलवाया
गुप्त की बात क्या कहूँ पढ़ साकेत नैन अश्रु भर आया
मेरी हिन्दी कैसी शापित आधुनिकता का राज्य हुआ
पढ़ना त्याज्य हुआ आंग्ल भाषा का सर्वत्र साम्राज्य हुआ

कैसी विद्रूपता कैसा भय शुद्ध हिन्दी अब अभिशाप है
कलम जब जब मेरी लिखे प्रांजल हिन्दी बने उपहास है
लच्छेदार उर्दू या अंग्रेजी अब है ज्ञान का मापदंड
बस हिन्दी दिवस एक बना लिया हमने करने को घमंड

ऐ मेरी मातृभाषा जाग हिन्द वीर अटल से सपूत जाग
विशेष है अभ्यंकर का देश है डमरू नाद प्रभूत जाग
धीर है वीर है प्रवीर है कोदंड प्रत्यंचा की टंकार है
हिन्दी तेरी नीवं में ऋचाओं के स्वर का अहंकार है

सत्य निष्ठ संबंधों का दर्पण है भारत भाषा हिन्दी
साहित्य कल्प गौरव-गरिमा अर्पण है भारत भाषा हिन्दी
सूर कबीर तुलसी का समर्पण हैं भारत भाषा हिन्दी
विचारक हूँ साधक हूँ धर्म तर्पण है भारत भाषा हिन्दी

संधान है, भारत की शान है, ज्ञान है, विज्ञान है हिन्दी
छंद है निबंध है, गीत है, हिन्द का अभिमान है हिन्दी
कलकल झरनों की झंकार वेद सुरों का गान है हिन्दी
दिनकर, गुप्त, निराला, प्रसाद में विद्यमान है हिन्दी

नमन है, वंदन है, अवगुंठन है अभिव्यंजन है हिन्दी
गुरु मनीषियों की साहित्यिक विधा का मंथन है हिन्दी
एक सौ चालीस करोड़ जन का मैत्री बंधन है हिन्दी
सांस्कृतिक परिधा में मानसिकता का अनुकम्पन है हिन्दी

अंगार उगलती कलम

अंगार उगलती कलम मेरी, देश गीत का मान है
ताकत है गोली से बढ़कर, बरछी तीर कमान है

चंद वरदाई बन समर में, जय दे पृथ्वीराज को
लिखकर भूषण साहस भरते, शिवाजी महाराज को
लिखती सुभद्रा की लेखनी, लक्ष्मी का गुणगान है
ताकत है गोली से बढ़कर, बरछी तीर कमान है

चंद्रबदन रंग रस श्रृंगार, लिख देखो मधुमास है
अलंकार उपमा से सज्जित, लिखा जो कालिदास है
नयन अश्रु बहा दे लेखनी, प्रीतम का अभिमान है
ताकत है गोली से बढ़कर, बरछी तीर कमान है

विशुद्ध भक्ति रस बरसता है, मीरा के रस गान में
अध्यात्म भक्ति की कलम बनी, तुलसी की पहचान में
सुर रसखान लिखें प्रभु महिमा, भारत की ये शान है
ताकत है गोली से बढ़कर, बरछी तीर कमान है

निसर्ग

चीर उत्तंग पर्वत शिखर नवल क्षीर सरिता बहा
दृढ़ कर भाव हृदय के, क्यूँ सोचे है बस बढ़ता जा
जीवन है एक अलौकिक झरना अविरल इसे बहा
डाल इंद्र धनुष रंग जीवन संग मधुर इसे बना

निसर्ग ने किया श्रृंगार का वरण
अकथ्य प्रीत का अभूत आचमन
मनो हरी निकुंज श्याम की शरण
निरत निशा नवीन चन्द्र आगमन

प्रफुल्ल ब्रज धरा सरोज सी सजे
सलज्ज गोप नार कान्ह को तके
धरित्रि की अद्भुत चारुता रची
हरित धरा ब्रजेश रंग ब्रज सजी

जयति रसेशराज नंद लाल जय
जयति मुकुंद श्याम छत्रपाल जय
नमन ब्रजेश सृष्टि चातकी तृषा
मुकुंद प्रीत में पगी दिशा-दिशा

यशोतनय करे प्रभास विभावरी
तुषार मय वसन गहे इला-परी
रचाय रास रसिक रास सांवरा
पुलकित 'इंदु' उर लखे मनोहरा

भारत–दशा

देख दशा देश की भावातिरेक में मेरा अशांत मन बह रहा था
चोटें कितनी सहेगा भारत देश मेरा, आहत तन यह कह रहा था
बहत्तर वर्ष का यह वृद्ध लंगड़ाता चल रहा अनाचार से ग्रसित
दर्द अतीत का दबाये है, चार–चार हैं इसके वस्त्र अव्यवस्थित

कहां गयी वो परज़्पराएँ, वो मर्यादित कथाएं, वो स्वर्णिम चिंतन
पुरषोत्तम राम की मर्यादा, कृष्ण का कर्मयोग, नित होता परिवर्तन
बुद्ध और महावीर की अहिंसा, नानक का चिंतन, गीता का ज्ञान
शहीद बलिदान, शिवा की शान, मीरा की तान, पुरखों का अभिमान

अब क्या देख रहा हूँ?

मजदूर की कमाई और रोटी की हो रही मौत को देखा
चाट रहे बच्चे जूठी पत्तल उस दूध की सौत को देखा
और और देखा नित मैंने होते सत्य निष्ठा के हनन को
देखा पैशाचिकता के उत्थान को, मानवता के पतन को

देखा मैंने दहेज ज्वाला से बचाने हेतुज़्रूण क्षरण को
देखा अन्नदाता के मूल्य के तिरस्कार से कृषक मरण को
यहाँ अस्मिता पर गिरती चपला देखी, बिकती अबला देखी
मित्र को ही मित्र कैसे छल रहे हैं यह अद्भुत कला देखी

विद्रोह देखा, विछोह देखा, नेता का सत्ता मोह देखा
चंद सिक्कों की खातिर कैसे करते लोग देशद्रोह देखा
गरीबों का शोषण देखा, आस्थाओं का मत पोषण देखा
निज अभिमान ऊंचा रखने को मैंने आत्म-तोषण देखा

जग में अनाचार देखा, व्यभिचार देखा, भ्रष्टाचार देखा
गुरु शिष्य, पिता पुत्र का दूर दूर होता शिष्टाचार देखा
सच को शूली पर चढ़ते देखा, झूठ को खूब पलते देखा
भारतीय संस्कृति का अवमान देखा, आस्था ढलते देखा

लोगों की हुंकार देखी, चीत्कार देखी, करुण पुकार देखी
जन आक्रोश की जलती अंगार देखी यह बारम्बार देखी
गर्म हवा देखी, विषैली फिजां देखी, रक्ताभ गगन देखा
पतझड़ बिन टूटे पल्लव-वल्लरी-सुमन उजड़ता चमन देखा

केशर क्यारी लोहित देखी, आतंक की होली खूनी देखी
शहीद होते वीरों के सर देखे, विधवा मांग सूनी देखी
भानु का अस्त देखा, युवा पस्त देखा, दीन को त्रस्त देखा
चोर-लुटेरे खाते माल देखा, अफसर, नेता मस्त देखा

लोहित नयन देखे, बदन नंग देखे, अनुभूति असंग देखे
खौफ के साए में स्वच्छन्द अम्बर में विचरते विहंग देखे
होता अनर्थ देखा, अंध मार्ग से आता कलुष अर्थ देखा
लिखते आशाओं को जागृत करने कविता कवि व्यर्थ देखा

क्या देश लाचार है?

आजकल कुछ अजीब नियम बन गया है–देशद्रोहियों का प्रशस्ति गान किया जा रहा है। विपक्ष एवं मीडिया इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता कह कर मंडित कर रही है, क्या देश लाचार है?

गगन हो रहा रक्ताभ है, वसुधा कर रही पुकार
शब्द शब्द हो जाओ अंगार हो जाओ अंगार

मीरजाफर जयचंदों की कितनी बड़ी जमात है
अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता कैसी अनोखी बात है
निर्लज्ज हैं मानव वेश में भेड़िये की गात है
बासंती वसुंधरा पर केसरिया बाना ज्ञात है

गद्दारों को श्रद्धांजलि दें कितना देश लाचार
गगन हो रहा रक्ताभ है, वसुधा कर रही पुकार
शब्द शब्द हो जाओ अंगार हो जाओ अंगार

याकूब को पूजे कोई तो कोई अफजल गुरु
अब देशद्रोहियों को क्यूँ नहीं भुनना करते शुरू
वन्देमातरम बोलना जिन्हें हराम है हराम है
सच पाकिस्तान की ये सब नाजायज संतान हैं

धकेल रहे ये भारत को गृह युद्ध में हर प्रकार
गगन हो रहा रक्ताभ है, वसुधा कर रही पुकार
शब्द शब्द हो जाओ अंगार हो जाओ अंगार

उत्कंठा–वेदना

न्याय

शोणित उष्णित होता ही है, देख अंध विधि धाराएँ
सच कहा न्याय होता अंधा, बात मान हम यह जाएँ
हमे मिली जो न्याय व्यवस्था, अंग्रेजी परिपाटी में
टके सेर भाजी वाली है, जा रहे अंध घाटी में॥

कौटिल्य नीति में कहा गया, न्याय दंड संतुलित रहे
अपराध गहन जितना है, वह न्याय संसूचित रहे
धर्म से ऊपर न्याय मंदिर, निर्मल न्याय भावना हो
क्यूँ डर रहे न्याय करने में, दृढ़ मनोबल कामना हो॥

तीन तलाक धार्मिक भावना, होली पर प्रतिबन्ध लगा
राम वास खोजते कहाँ था, आक्रान्ता बाबर न दिखा
परिलक्षित न्याय न गर हो तो, न्याय नहीं वह गाली है
सत्यमेव जयते वेद वचन, झूठा रीता खाली है॥

कोरोना

अस्त व्यस्त पस्त त्रस्त जब जीवन होता है
तब भयाक्रांत मानव तन मन सब होता है
अफवाह सुन भयभीत अगर मनुज होता है
मृत्यु से पहले गले मृत्यु के वह होता है

संयम रख कर संवेदनाओं को करो सिंचित
मार्ग पड़े इन रोड़ों से न डरो तुम किंचित
मेघ क्षण भर को मात्र रोक सकते रवि उदय
भय हीन पथिक को डरा नहीं सकती प्रलय

चेतनता रखो विकट समय है माना अभी
दिशा निर्देश का पालन भूल न जाना कभी
माना संहारक महामारी है कोरोना
चली जायेगी यह भी तुम बिल्कुल डरो ना

वेदना

कंटीले शूल भी दे दुलार पुकारे बिखरे पंथ को निहार,
ऐ जीवन-बगिया के बागबान रूठ तुम कहां चले गए।

उष्णता बचपन की खो गयी काली घनघोर घटाओं में,
दर्दभी चमक-चमक कह रहा सौदामनी की बांहों में,
मार्ग पर दृग है अड़े हुए, ओ बाबुल मेरे तुम कहां गए।
कटीले शूल भी दे दुलार पुकारे बिखरे पंथ को निहार,
ऐ जीवन-बगिया के बागबान रूठ तुम कहां चले गए।

शीतल करने मन को, ढूंढ़ रहा अब स्नेह-स्पर्श अचल,
हो अमावस की डगर, अम्बर हो या हो अवनी पटल,
चीर रजनी का तिमिर, दीप जलाने तुम कहां गए,
कटीले शूल भी दे दुलार पुकारे बिखरे पंथ को निहार,
ऐ जीवन-बगिया के बागबान रूठ तुम कहां चले गए।

आह अधरों पर न निकल सकी, रुक गए रूठे बोल,
झरते इन अलकों में झील से अब यादों के हिंडोल,
तनूजा तेरी बैठी डोली, बाबुल तुम अब कहां गए,
कटीले शूल भी दे दुलार पुकारे बिखरे पंथ को निहार,
ऐ जीवन-बगिया के बागबान रूठ तुम कहां चले गए।

दर्द हृदय का उभर उभर, अश्रु-जल बन बहा जा रहा,
ऐ जीवन माली पुष्प तेरा तेरे बिना, क्यूँ मुरझा रहा,
पथ पर आशाएं बिखेरे, ये सूरज क्षितिज पर जा रहा,
स्नेह-प्यार की निर्मल छाँव दिए बिना तुम कहां गए,
कटीले शूल भी दे दुलार पुकारे बिखरे पंथ को निहार,
ऐ जीवन-बगिया के बागबान रूठ तुम कहां चले गए।

बिखर गए जीवन के तार

आंसुओं के समंदर में बह, बिखर गए जीवन के तार।
कितनी आह सहा कितने गम, बन्द ही रहे अंतस द्वार।

जीवन मेरा बदरंग हुआ, आया कुछ ऐसा तूफान
इधर उधर तिनके सा उड़ता, टूटता बिखरता अभिमान
लगती रहीं ठोकरें फिर भी, छुपाये रहा मन उद्गार
आंसुओं के समंदर में बह, बिखर गए जीवन के तार।

आशाएं क्षत हुई कब कहाँ, किसको दूँ मैं इसका दोष
क्या मुझसे ही हुई भूल यह, मैंने ही किया आत्मतोष
वादियां पतझड़ से घिर गई, सर्द हवाएं चली हर बार
आंसुओं के समंदर में बह, बिखर गए जीवन के तार।

संवेदना का प्रेषण किधर, और किधर सुप्त लुप्त मौन
हर सिम्त रुसवाईयाँ रही, दिल बार बार पूछे कौन
उत्तर मेरे पास भी न था, उत्तर ढूंढू बारज़्बार
आंसुओं के समंदर में बह, बिखर गए जीवन के तार।

गीत मेरा संगीत मेरा, कविता संग सुरीली तान
मधुर मदिर काव्य छंद सा था, मेरा सुंदर जीवन गान
छेड़ा टूटी लय आ कोई, और गडमड हुई झंकार
आंसुओं के समंदर में बह, बिखर गए जीवन के तार।

तूफान काल बैशाखी का, डगमग डगमग करती नांव
जैसे गंगा की लहरों में, माझी ढूंढ़े अपनी ठाँव
जीवन नैया कौन संभाले, कौन चलाये यह पतवार
आंसुओं के समंदर में बह, बिखर गए जीवन के तार।

शांत हो ले अधीर मन

शांत हो ले अधीर मन हो ले शांत
अवशेष द्वेष के करले आज भ्रांत
क्यूँ होता व्याकुल क्यूँ हो रहा क्लांत
अधिकारों के बंधन टूट फुल गए
हृदय के वातायन......

आशाएं उद्दीप्त संबल बांहों का
नयन अश्रुपूरित उत्कर्ष चाहों का
अनुराग विशेष सार्थक आहों का
जीवन साधन के लक्ष्य कबूल हुए
हृदय के वातायन......

देह उत्पीड़न

कर्म चेतना चेतस चतुर्मुखी चिदानंद चयनित
दृढ़ निश्चय अंतस् हिरण्य गर्भा सादर आमंत्रित
मृदु भावों की संचयित पुस्तक गाथा शब्दातीत
अवलोकन पुनरावलोकन आत्मावलोकन प्रतीत

क्षण क्षण क्षरित देह उत्पीड़न निज वेदना आक्रांत
पुनः पुनः हृदय पीड़ा निष्पादित चेतना अशांत
नियतिश्चक्र पारितोषिक स्वीकृत प्रेरणा आक्लांत
हृदयंगम विस्फोटित भावना क्षतिपूरित सकलांत

क्या कहूँ कैसे कहूँ निज व्यथा अचित्रित त्रस्त कथा
जीवन्त त्रासदी, कुटिल नियति, व्यापक-रोष सर्वथा
पल-पल सम्प्रेषण-संवेदन युगात्मक जन प्रथा
आत्मसात स्वध्याय शेष अशेष रचना हरि कथा

नियति के निसर्ग में आत्म कर्मत्व का पुनर्लेखन
पुरुषार्थ के नव आलोक में सुख दुख का अवलोकन
सत्य के शोध में अनाग्रह का सत्य साधना गमन
यथार्थ के नभ में वेदना तो है नियति का प्रचलन

नियति पुरुषार्थ कर्म अधीन कर्म बोध अपौरुषेय
कर्म प्रधान कर्म जिजीविषा कर्म जीवन्त अजेय
प्रज्ञानं ब्रह्म सत्य वक्ष के रोम रोम में व्याप्त
जागृति से सुसुप्ति की करके यात्रा मोक्ष हो प्राप्त

देह उत्पीड़न–2

क्षत क्षत क्षरित देह रोग ग्रस्त, वेदना कीजिये निस्तार
आनंद कोष अनुभूति लिए, आनंद का करिए प्रसार
अन्नमय कोष में बिन्धित खग, अम्बर उड़ता कितना तेज
वासना को मुक्त गगन मिला, स्वामी करो शीघ्र निस्तेज

भवबन्धन मुक्ति आशा लिये, नित्य ही शरण गहुँ सरकार
बाधित करें ये वासनाएं, बिन पंख उड़े व्योम अपार
जिजीविषा बड़ी हठीली है, प्राण भूत प्राणकोष भेज
वासना को मुक्त गगन मिला, स्वामी करो शीघ्र निस्तेज

नियति पारितोषिक स्वीकृत है, निष्पादित चेतना अशांत
हृदयंगम विस्फोटित भावना, क्षतिपूरित करती सकलान्त
नट नटीली रस रसीली है, लावण्यमयि सनसनीखेज
वासना को मुक्त गगन मिला, स्वामी करो शीघ्र निस्तेज

दिगउद्घोष नाद प्रणव लिए, परिलक्षित है नूतन भोर
जीवित त्रासदी व्यापक रोष, सर्वत्र है भयावह शोर
प्रभो 'इंदु' पर कृपा कीजिये, अध्यात्म ज्ञान रखूं सहेज
वासना को मुक्त गगन मिला, स्वामी करो शीघ्र निस्तेज

प्रेरक कविताएं

आकांक्षा

करो प्रयत्न की हो मन शक्ति उन्नत
मार्ग हो प्रशस्त अंतस हो चमत्कृत
हिरण्य पथ सौंदर्य प्रज्ज्वल भी हो

हो कान्त तन शान्त मन सौम्य दर्शन
हो तिमिरांत रात्रि का अशेष अवसन
जीवन आदर्श शची उज्ज्वल भी हो

हो अंतःकरण दृष्टिपात चित्त शांत
स्फुर्लिंग प्रज्ञा प्राप्त आत्मशुद्धि ज्ञात
संचित सिंचित ये लक्ष्य सफल भी हो

हो उन्नत संस्कार ध्वस्त अहंकार
प्रयत्न शील संसार शिष्ट व्यवहार
अभिमान अंकुरित तप हरपल भी हो

हो समृद्ध जीवन विचार का दर्पण
हो लक्ष्य परमार्थ जन सेवा अर्पण
यह भाव जीवन लक्ष्य निर्मल भी हो

ईश के प्रति हो सदा मेरा समर्पण
हो भावों मे मेरे अनुपम तर्पण
आत्म विश्वास सर्वोच्च विमल भी हो

आशावादी गीत

आज है सारा गगन स्पंदित मन स्पंदित तन स्पंदित
निस्पंदित कनक-रश्मियाँ अंतस करती घन झंकृत
श्वास श्वास पर कामनाएं आ पुनः मुरझाती हैं
तब तब उठा तिमिर के वितान आशाएं आती हैं

यादें सुनहरी क्षितिज से जब जब आ टकराती हैं
इंद्रधनुष सी स्मृति जब मन में हलचल मचाती हैं
रजनी भी जब ला ला उमंग शशि प्रभा बढ़ाती हैं
तब तब उठा तिमिर के वितान आशाएं आती हैं

नव आशाओं नव कामनाओं को प्रस्फुरित करने
मधुप की गुंजन मध्य सुरभि मकरंद वितरित करने
जब स्पंदित अम्बर रेखा स्नेह मेघ बरसाती है
तब तब उठा तिमिर के वितान आशाएं आती हैं

सागर के निकट रहें तो

सागर के निकट रहें तो भी, बुझती नहीं प्यास
गगन मध्य विचरते लगा कर, बादलों से आस
मान करते वे जुगनुओं का, आभा रहे पास
मिल न पायेगा ध्येय अपना, जो हैं शशि प्रकाश

दिशा हीन भटक ढूंढ़ते वे, झूठी आस अर्श
सार्थक जीना उसका क्या है, न जीवन उत्कर्ष
बीच पथ से मुख मोड़ करते, निरन्तर संघर्ष
निश्चय पाते मंजिल वे ही, जो एक आदर्श

निरन्तर बनो गति शील रहे, कितने बिछे शूल
शूल भी हों फूल विचार हों, यदि ध्येयानुकूल
वारिद बूंदें लाती मोती, जा जलधि के मूल
सकारात्मक बनकर बढ़े चलो, कठिनाइयां भूल

कर्म करो यही तो धर्म है बताएं श्रीकृष्ण
नियति है परीक्षा देनी है सीखो बन सतृष्ण
अंतस में बैठे अ-ज्ञान को, करो भी अब दूर
हारी बाजी पलटने हेतु, कर इसे मजबूर

एक रचना जीवन के सन्दर्भ में

प्रात: का सूरज अमृत रूपी नव किरणों से सिंचित कर हमें नव ऊर्जा देता है। सहनशील बन समस्त बाधाओं से लड़ना सिखाता है। कभी मन में निराशा न रखनी चाहिए। आनंदित रहें, आशा रखें, आगे बढ़ते रहें।

हिरण्य आभा विस्फुरित द्रुरूम सज्जित मंजूषा
फेनिल लहरों में हो प्रतिबिंबित चमकती उषा
जीवन यामिनी के विजन तमस का था अवसान
निशा उपरांत रक्तोत्पल का सुरभित हुआ गान

शीतल तुहिन कणों से पूर्ण धरा थी पटी हुई
क्षिति के आँचल में रक्ताभ रश्मियाँ डटी हुई
एक यवनिका हट, पट का नवल अनुच्छेद हुआ
करें स्वागत नव प्रात का, विगत परिच्छेद हुआ

एक मौन एकाकी तन वेदना स्फोट अनुकुल
शांत! शांत! मन निज चिंताओं से न हो व्याकुल
ऐ मन हार न जीवन दांव, न हो इतना अधीर
जीवन निशि-तमस मिटा दे, होता है वही वीर

व्युष-सुधा पान को आतुर आनंदित स्पंदित मन
तृषित अवनी-हृदय तृप्त करे व्योम वारि सिंचन
आशा तो नवल मुखुर होती द्रुम शाखाओं पर
भू सा सहनशील बन चलना है बाधाओं पर

शब्द प्रेम, शब्द अनुराग

शब्द प्रेम, शब्द अनुराग, शब्द नेह बिखेरते हैं
शब्द विगत कटु स्मृतियां भी, कभी कभी उकेरते हैं
शब्दों के जग में खो गया, तो लुप्त हुई साधना
शब्द गूंज इतनी थी, कर गयी अशांत मन भावना

शब्द शब्द से अनुभूति मिली, देते हैं शब्द ज्ञान
शब्द महामहिम हैं शब्द में वासित है ब्रह्म ध्यान
अक्षर से है सुसज्जित शब्द, अक्षर ही है आत्मा
एक एक अक्षर बंधन दृढ़ता का, ज्यूँ परमात्मा

रुठते देखा शब्दों को जब हो अत्याधिक विचार
रोते देखा शब्दों को जब करते मौन संचार
भीष्म का मौन वाचालता द्रौपदी की जगत विदित
कारण महाभारत युद्ध का बनी क्रूर शब्द निहित

होते इतने कठोर शब्द कभी चुभते बन त्रिशूल
असमय ये कटु शब्द होते है हृदय के प्रतिकूल
वाणी की मिठास बुनती शब्दों के सर्वदा जाल
हृदयंगम कर वशीभूत करती दूर हो अरि-चाल

हृदय के वातायन

हृदय के वातायन तो खुल गए
शूल चुभे थे वे भी भूल गए
तन्तु प्रेम का टूटा था तो भी
दाग सारे क्लेश के धूल गए

चमत्कार यह कैसे हुआ है
क्षत थी आशा औ मन छुआ है
अवनि तल पर गुंजित प्रेम लय
नभ अगोचर, अंतस धुंआ है

शांत शांत अधीर मन हो कान्त
अवशेष द्वेष के हुए सब शांत
अधिकारों के बंधन टूटे तब
होता व्याकुल क्यूँ न हो क्लांत

आशाएं उद्दीप्त, संबल बांहों का
नयन अश्रुपूरित उत्कर्ष चाहों का
सफल जीवन साधना लक्ष्य हुवा
अनुराग विशेष सार्थक आहों का

मुस्कराता चल

मुस्कराता चल तू मुस्कराता चल
भूल गमों को तू कदम बढ़ाता चल
देख मंजिल तेरी तेरे पास है
पा जाएगा तू आज नहीं तो कल
मुस्कराता चल तू मुस्कराता चल

मस्ती के गीत को गुनगुनाता चल
दिया खूब जग ने मजे उठाता चल
सागर गहराई में छिपे दर्द को
किनारों पर लहर संग डुबाता चल
मुस्कराता चल तू मुस्कराता चल

राह में बस शूल ही शूल मिलेंगे
मुस्कराहटों से तो फूल खिलेंगे
उगते सूरज की लाली सदृश दमक
डूबते सूरज सा कभी भी ना ढल
मुस्कराता चल तू मुस्कराता चल

धूप छांव का खेल खेल मचल मचल
रिश्तों को मोहक मधुर बनाता चल
राग द्वेष जीवन मे भरे पड़े हैं
दुनिया में कदम बढ़ा सम्भल सम्भल
मुस्कराता चल तू मुस्कराता चल

अपने घर को रोशन कर चुके बहुत
औरों के घर भी दीप जलाता चल
दुःख तो साथी हैं लंबे सफर का
हटा दुःख भर साहस दिल में हर पल
मुस्कराता चल तू मुस्कराता चल

सीख पुष्प से खुशबू छोड़ते नहीं
रह कर संग शूल के डोलते नहीं
तू तो दुनिया को सुरभित करता जा
और निज जिंदगी को महकाता चल
मुस्कराता चल तू मुस्कराता चल

ऐसे समय जिंदगी में आएंगे
मन अशांत हो कुविचार सतायेंगे
ईश्वर ने बहुत दिया हमें सोच कर
ऊपर वाले का शुक्र मनाता चल
मुस्कराता चल तू मुस्कराता चल

आह जब सीमाएं पार कर

आह जब सीमाएं पार कर, उद्वेलित हो जाती है
अज्ञात चेतना सार्थक हो, जब संचित हो जाती है
संघर्षता मानव कर्म की, आधारित हो जाती है
वेदना मनोभाव की सिकुड़, ऋत स्त्रावित हो जाती है।।

जीवन समर का घन-नाद तो, दुःराग्रही होता है
उल्का या करका निपात हो, ये पूर्वग्रही होता है
संसाधन सिमित हृदय विचलित, तब सर्वग्रही होता है
विशेष सम्प्रेषण की स्थिति में, यह अनुग्रही होता है।।

विषम परिस्थितियां हों तो, होता समझौता ही है
कभी कभी शूल भरे पथ पर, भी चलना होता ही है
जीवन समर में श्रेष्ठ नर का, दृढ़ निश्चय खोता ही है
लक्ष्य कर निर्धारित चले तो, पथ सरल सँजोता ही है।।

विफलताओं से हार कर नर, जो विचलित हो जाते हैं
निराशा अवसाद के घन में, बिखर शक्ति खो जाते हैं
परिवर्तनीय जगत चेतस से, नरत्व को वो पाते हैं
अन्तः वेदना भूल सस्मित, अनुरक्ति सँजो जाते हैं।।

देख असफलताएं

देख असफलताएं वीर क्यों तू ढो रहा अंतर्मन में भार
बाधाएं तो यूँ ही आएँगी दुर्गम मार्ग है कभी न हार
नित नूतन संकल्प होगा नित नूतन गौरव जगाना होगा
जड़ता की बेड़ी जकड़ी काट इसे आत्मबल बढ़ाना होगा

समय के समक्ष घटित होती मानव परिकल्पनाएं लुप्त है
भूत और भविष्य के मध्य वर्तमान शांत सा खड़ा सुप्त है
सुबह की भानु प्रभा भी कोहरे में दबी दबी विद्यमान है
क्रूरतम समय सापेक्ष है रात्रि का गहन तम चलायमान है

अंतस टीस हथेली पर फफोले बना इतिहास रचा रही है
ढूंढ़ती दूरस्थ दृष्टि नव भोर को बार बार बुला रही है
तिमिर ढलेगा नवल भोर होगी एक सुबह का इंतज़ार है
छटेगा कोहरा हटेगा निराशा का बादल यही स्वीकार है

अवसाद के सागर से तैर कर बाहर निकलना है मान ले
परिवर्तन अवश्यम्भावी है जो था नहीं रहेगा जान ले
नई सुबह होगी नव पक्षी चहकेंगे धूप तो अपरिहार्य है
धूप छांव का खेल है दुनिया हार के बाद जीत अनिवार्य है

गरज रहे जो

गरज रहे जो जल-विहीन मेघों की भांति कहीं
वे कदापि भी कहलाते उत्साही-शूर नहीं
शूर वही जो पुरुषार्थी और चेतस-शील हो
वीर वही जो उत्साही-परमार्थी स्नेहिल हो।

बलहीन-मूढ़ है, वह मानव जो उत्साह-रहित है
कर्म-वीर, चित्त-वीर है जो उत्साह-मीत है
सर्व सुलभ हो जब पौरुष संग उत्साह होता
धीरज से लें शिक्षा, जहाँ आत्म-प्रवाह होता।

आत्म-तेज़ हो चुका हो अगर पूर्ण ध्वस्त-त्रस्त
हो चुका जब पराक्रम सम्पूर्ण अवसाद ग्रस्त
निश्चित है उसको जीवन में हारा मानो तुम
उत्साह-हीन होते हैं, शोकाकुल जानो तुम।

निकृष्ट होते जो, आती उन पर आपदा घोर
बिगड़ते कार्य सब, लेते खुशियों की काट डोर
सुख वे कभी नहीं पाते, जो होते नहीं शूर
बन अशोक, उत्साही जन करते दीनता दूर।

प्रभा रश्मियाँ

देखा रूपांतर, क्षय, सृजन, दीप प्रकाश, प्रभा रश्मियों में
यह जग परिवर्तनशील है, भ्रम प्रभा वलय का उर्मियों में
सरिता प्रवाह दृश्य, निरंतर स्थान विशेष का सापेक्ष है
कहीं वेगवान, कहीं स्थिर, जल वही पर दृष्टिदोष उपेक्ष है

जल की भांति ही यह देह चलायमान और आत्मा स्थिर है
इस नाम की पहचान देह से है जबकि बदलता शरीर है
अपना अस्तित्व स्वीकार कराओ प्रभु, बाकी सब मिथ्य है
सत्य से साक्षात्कार करा, बतला हमें, ब्रह्म ही नित्य है

आसक्ति एवं विरक्ति अज्ञानी की होती अभिव्यक्ति दो
मिट रहा अस्तित्व इनका स्वामी आ अज्ञान में युक्ति दो
है आत्मा शुद्ध जान लेते यह पदार्थ से तत्व भिन्न है
नहीं मोक्ष का कोई महत्व ज्ञानी को अहिर्निश छिन्न है

आस्था

आस्था प्रतिपादित होती अनुष्ठान-मंच पर शांति हेतु
कर्मबोध आस्था से बाधित होता नहीं यह जीवन सेतु
तिरोहित-अभिलाषा, परिवर्तित-आशा, लाते शुभलक्ष्य है
जीवन परिचय तो संकेतात्मक बिंदु है बस प्राकट्य है।

स्थावर प्रज्ञा आत्म संशोधन को आधार करती प्रदान
जीवन संकलन में उत्कृष्ट निष्कृष्ट विचार एवं ज्ञान
परिचय होता नहीं आत्मा का परिचय है नश्वर तन का
आत्मा परमात्मा एकाकार हैं अन्यथा भ्रम बस मन का।

वारिद बूंदों को तृषित धरा अपरिचित है जल आपूर्ति से
सन्निकट जलधि के रहते पर अपरिचित हैं तृष्णा पूर्ति से
उद्वेलित मन को शांति है अपरिचित, प्रयास को है भ्रान्ति
क्रोधित मन को क्षान्ति, रोगी देह को अपरिचित है कांति।

मेरा प्रभु मुझसे परिचित, नहीं चाहिए मुझे और परिचय
आत्म-संतुष्टि हो, अंतस हो शांत, प्रेम निवास हो निश्चय
सद्बुद्धि का प्रवेश हो, दंभ अनीति खल न कदापि कतिपय
आनंद हो, उमंग हो, जीवन व विश्वास का हो समन्वय।

शुभ्र ज्योत्सना

ज्यों शुभ्र ज्योत्सना प्रभाषित अम्बर वितान पर सकल
प्रभु कृपा से आरोहित मन तू अंध समर से निकल

मंथर-मंथर ऐ निशि अब बढ़ती चल
लिए अंध असीम, बढ़ तू बढ़ प्रतिपल
नवल पुष्प ये सदृश अभ्र पुंज शांत
राकागण की ओढ़ कर चादर कान्त

करले समाहित निज अस्तित्व को प्रभु चित्त में विकल
ज्यों शुभ्र ज्योत्सना प्रभाषित अम्बर वितान पर सकल

विचित्र सजीव जीवन का अन्वेषण
हर्षित कर रहा स्वप्न सुखमय प्रेषण
निशा के तीन प्रहर भी दर्शा रहे
जीवन पंथ की गति हमें बता रहे

समय काल द्योतक जीवन दर्शन समदर्शी अविरल
ज्यों शुभ्र ज्योत्सना प्रभाषित अम्बर वितान पर सकल

बालपन लिए अपरिपक्व प्रथम प्रहर
ज्यों स्वतंत्र विहंग नीड़ को अग्रसर
पूर्ण युवा सी होती है मध्य रात
सघन स्वप्न संग हो प्यार भरी बात

हरि स्मरण हरता प्राणी जीवन कलुष पल पल हर पल
ज्यों शुभ्र ज्योत्सना प्रभाषित अम्बर वितान पर सकल

रात्रि का अवसान, देह गमन समान
अकेला बुढ़ापा, अंतिम समाधान
उषा का आगमन, चली शीतल पवन
नवजीवन नव सौरभ की नवल छुवन

हे नाथ हर समस्त विकार 'इंदु' अंतस के पुष्कल
ज्यों शुभ्र ज्योत्सना प्रभाषित अम्बर वितान पर सकल

प्रकृति–उत्सव

अनुपम वसंत

सात रंगों को नभ पर दिया अवनि ने उछाल
लगे इंद्रधनुषी क्षितिज पर दिया मल गुलाल
अनंग उमंग सुरभित कर अंतस का पलाश
धानी चुनर ओढ़ मद कामिनि चली पिय पास

अंग अंग उद्वेलित करे ऋतुराज अनंत
अनुपम अभिलाषा मदिर लिए आया बसंत

समीर सरल अभिभूत, नव रुत सुहानी चली
लिए हरित पल्लव, किसलय, रातरानी चली
कांत मिलन का अतिरेक, झंकृत आली चली
हृदय चितचोर कर समर्पित मतवाली चली।

गा रहा गीत नूतन मन सुरभित दिग दिगन्त
अनुपम अभिलाषा मदिर लिए आया बसंत

पिय आवन की गौरी मन आस बसाय चली
मेहंदी पायल बिछिया बदन सजाय चली
फ़ाग की मदमस्त मदन बयार ऐसी बही
कि पिय हुलक उठी तन बदन आग लगाय चली।

प्रेयषी की व्याकुल अँखिया खोज रही कंत
अनुपम अभिलाषा मदिर लिए आया बसंत

चली तो ऐसी चली अंग अंग लहक उठा
होरी रंग संग अनंग रस मिल दहक उठा
प्यार की फुहार में भींग तनबदन मचला कि
सोंधी सोंधी खुशबू में हर अंग महक उठा।

मन चित्त चोर समावेशित प्रेम रस अनन्त
अनुपम अभिलाषा मदिर लिए आया बसंत

इस बसंत कैसी अनंग उमंग अंग हुई
प्रीत गुलाल चूमे कपोल मद तरंग हुई
बसंती खुमार में नशीली बयार चल रही
सपन रंजन भींग सपन ही कान्त संग हुई।

प्राण प्यारा प्रणय अशेष अतिविशेष उदंत
अनुपम अभिलाषा मदिर लिए आया बसंत

कुम्भ

गंगा की पावन तरंग
तरिणि सुता मदिरिल उमंग
है सुप्त सरस्वती संग
अमिय बून्द गिरी थी चार
हे दीप्त भौम नमस्कार।

अमावसी जन मेले में
लोगों के इस रेले में
हूँ भीड़ में अकेले में
देखा सनातन संस्कार
हे दीप्त भौम नमस्कार।

ऊं नाद बम बम महेश्वर
संत अखाड़े नदी तट पर
किन्नर बनते मंडलेश्वर
इस कुम्भ में पहली बार
हे दीप्त भौम नमस्कार।

है अस्थि, मांस, शेष देह
प्राण पुण्य बल स्वर्ग नेह
धरा छोड़ रख मोह गेह
शेष बचे करें चीत्कार
हे दीप्त भौम नमस्कार।

अर्ध कुम्भ वैभव प्रणीत
देख संत ठाठ धन प्रीत
कुंठित हुए मेरे गीत

शरद पूर्णिमा पर विशेष

श्वेत हंस का अबद्ध कलरव, सस्मित नारी सा परिभाषित
मंजीर ध्वनि गौर वर्ण देह, चन्द्र नायिका सा आभाषित
रजनी का शीतल विधु करता, उद्वेलित गहन शांत मन को
श्वेत मालती विकसित बनती, सप्त वर्णी शुक्ल उपवन को

जलरहित श्वेत मेघ नभ विचर, देख रहे अब अवनी तट को
रजत, शंख, मृणाल से हैं ये, चामर डुलाते वंशीभट को
पावस पश्चात् नील अम्बर, करते अ-प्रतिम शोभा मंडित
लाल लाल पुष्प, नीलाकाश, कांतिमय करें मन उत्कंठित

मनमोहक प्रभा है प्रसारित, दे दृगानंद विधु करे तृप्त
मानो विप्रयोगित विषदिग्ध, शर आहत प्रेयषी संतप्त
शीतल अनिल रवि प्रभात की, तुहिन कणों को सुखा रही है
फलाच्छादित वृक्ष शाखा को, प्रकृति भूमि पर झुका रही है

मेघविहीन व्योम विभा कांति, लेकर यह सुशोभित हो रहा
मरकत मणि विधुजल से विकसित, रक्तोपल प्रभाषित हो रहा
महारास करने सजी धरा, जमुना तट की पावन देखो
पूर्ण शरद आई मनमोहक, मनमोहन का नर्तन देखो

कालिंदी तट को जब शीतल, समीर सुरभित कर जाती है
मध्य रात्रि में चंचल जल पर, जब चन्द्र प्रभा बिखराती है
हृदय पीयूष कुंड स्पंदित हो, धम धम कर शोर मचाता है
हे श्याम देख तेरी लीला, अंतस हर्षित हो जाता है

नम निशा का पूर्ण शरद चन्द्र, चांदनी से नभ भिंगोता है
खिली चांदनी में निश्चिंत हो, प्यारे सारा ब्रज सोता है
तब याद आता है वो रास और हृदय विह्वल होता है
हे कान्हा तेरे वियोग में, ये मन झम झम कर रोता है

प्रकृति चित्रण

नील धीर नभ से छन छन करती आ रही रवि रश्मियाँ
चित्रकार सी रच रही अंतस-पटल पर व्योम झलकियाँ
ये तरुवर ये शाखाएं ये नव पुष्प हृदय रहा बहक
हरित वसुंधरा, सुरभित कर रहे पलाश, खगों की चहक

क्षितिज पर अवनि अम्बर का सुंदर मिलन मन लुब्ध करे
प्रकृति की रमणीक ममतामयी सौन्दर्यता मुग्ध करे
यहाँ उषा की किरणें दुग्ध सा बिखेरती हैं वात्सल्य
धूप-छांव का सा आँचल पसारें मेघों का चापल्य

सहोदरा बन बांधती राखी ये स्निग्ध भानु रश्मियाँ
प्रफुल्लित अंतस पर ज्यूँ तैरती रही मुग्ध नीरज पंक्तियाँ
अविरल संसृत नीरधार और झरता अनुपम जल श्रोत
विहंगम प्रकृति दृश्य हृदय तक करे प्रेम से ओत-पोत

शिशिर की रात्रि

शीतल तुहिन कणों से समुचित, वसुंधरा है पटी हुई
क्षितिज़ के आँचल से मनोहर, रक्ताभ रश्मि डटी हुई
नूतन अनुच्छेद जीवन पट, निरत यवनिका हटी हुई
नवल भोर हुई, नवल आशा, संग स्मृतियाँ लिपटी हुई

हुआ सघन अम्बर आलोकित, सजी है निशि विधुप्रभा में
पलक पावनी तारिका माल, सजाए है निज सभा में
मंथर मंथर निशा का गमन, दिनकर का आगमन हुआ
असीम अंध-तिमिर काट व्यूष, निश्चित कलुष प्रशमन हुआ

क्यों शिशिर ऋतु मदन चंचल हैं, द्युति रश्मियाँ चहुँ ओर है
धवल-धवल दिगंत तरु शाखा, मोहक तुषारित भोर है
अवनि अंबर हुए एकाकार, अद्भुत ही आलिंगन है
सृष्टि के प्रणय पर नील वर्ण, तरुण मृदुल आमंत्रण है

विभावरी सज्जित निशा संग, शशांक प्रभा तुहिन कण हैं
अगरुयुक्त ऊष्ण अग्निष्ठिका, देती सुख अब हर क्षण है
अति तीव्र तुषार मंडित वायु, वेग हर पल शीत क्षण कब
वृहद रात्रि विमोचन हुआ अब, परिवृद्ध होगी दिवा अब

अरुणिमा लोहित अम्बर प्रथम, दिनकर किरणों का होगा
सरोवर में कमल होगा ज्यूँ, उत्सव भृङ्गो का होगा
विचरते व्योम में विहग वृन्द, जाने को क्षितिज तैयार
कुसुमित कुंज में पिया दर्शन, प्रेमाकुल प्रिया का प्यार

शिशिर ऋतु

जब उत्तरी गोलार्ध का अक्षीय झुकाव होता है तो शिशिर प्रारम्भ होता है और यह झुकाव सौर मंडल में सूर्य की पृथ्वी से नजदीकी के अनुसार होता है जो हर वर्ष 22 दिसम्बर को होता है। शिशिर ऋतु के बारे में महाकवि कालिदास ने ऋतुराज शब्द लिखा है। वैसे सामान्यत: ऋतुराज वसंत को कहा जाता है।

प्ररूढ़शाल्यंशुचयैरमनोहरं कंचितस्थितकौंचनिनादराजितं
प्रकामकामं प्रमादजनप्रियं वरोरूकालं शिशिरहरयं श्रृणु।

(शिशिर के स्वागत में यह रचना, प्रेरणा ऋतु संहार से)

अनध्याय नि:शब्द मार्ग है तुषार वेग वायु कम्पित
प्रतीक्षा तितिक्षा द्युति अभिक्षा निरीक्षा अंतस स्पंदित
पल्लव-पात-रत तरु विभीषिका आशान्वितपात हरित
दृश्य प्रमोदित शाख पोषित पुष्पद नीहार आच्छादित।

दूरस्थ आर्क हुआ मध्यम कम्पन छाया तिमिर में
आरुषी की मिहिका जटिल कर रही है मार्ग शिशिर में
तुषारित पवन झोंकों से विचलित निबद्ध है शिविर में
बाल वृद्ध छोड़ सब कार्य ढूंढ़ रहे आतप मिहिर में।

शिशिर ऋतु राज, चंचल हैं द्योतिस रश्मियाँ चहुँ और
धवल-धवल दिगंत शिथिल तरु शाखा तुषारित भोर
तुषारापात अद्भुत प्रात विभंजन, पात निपात सकल
नूतन पल्लव चाह लिए तरु ज्यूँ तरुणी हो रही विकल।

बृज की धरा

(वाचिक पंचचामर)

निसर्ग ने किया श्रृंगार का वरण
अकथ्य प्रीत का अभूत आचमन
मनो हरी निकुंज श्याम की शरण
निरत निशा नवीन चन्द्र आगमन

प्रफुल्ल ब्रज धरा सरोज सी सजे
सलज्ज गोप नार कान्ह को तके
धरित्रि की अद्भुत चारुता रची
हरित धरा ब्रजेश रंग ब्रज सजी

जयति रसेशराज नंद लाल जय
जयति मुकुंद श्याम छत्रपाल जय
नमन ब्रजेश सृष्टि चातकी तृषा
मुकुंद प्रीत में पगी दिशा-दिशा

जहाँ जहाँ पड़ी नजर दिखे मदन
निशा करे अविरल आरती मगन
सरोज नयन मोर मुकुट भाल है
अलक कपोल खेलती अराल है

यशोतनय करे प्रभास विभावरी
तुषार मय वसन गहे इला-परी
रचाय रास रसिक रास सांवरा
पुलकित 'इंदु' उर लखे मनोहरा

रात्रि विवरण

अमा निशा का बिखर चला तम, छँट प्राची के अम्बर में
उदित हुआ नव व्युष अरुणित सा, मन के गहरे सागर में
अवसादित मनःस्थिति अवस्था, बदल गयी तुझको पाकर
छन छन मन्दिरों की घण्टियाँ, भरने लगी प्रीत गागर

तिमिर का उठ रहा वितान तब, आशा आती टकराकर
छन छन मन्दिरों की घण्टियाँ, भरने लगी प्रीत गागर

प्रेम अंकुरण इड़ा द्वार पर, थपक हृदय गति बढ़ा रही
भानु प्रभा हेम रश्मियों सी, उर्मियों पर बिखरा रही
जल लहर पहन शिंजनी करे, नर्तन बालुका राशि पर
मन्द मुस्कान नयन कटीले, घात प्रेम प्रत्यासी पर

शशि प्रभा अंतः आस बढ़ाई, यूँ रजनी ने ला लाकर
छन छन मन्दिरों की घण्टियाँ, भरने लगी प्रीत गागर

तेरा स्पंदित करता वह स्पर्श, स्मृति में अब तक अंकित है
केसर सुरभित सांसों का वह, रूप अनोखा संचित है
मलयज शीतल बयार बन तू, जीवन परिधि चक्र छाई
विधु की चांदनी ले स्वयं में, रचित अंग अंग लुनाई

करे सतरंगी इंद्रधनुषी, स्मृति मन के भाव उजागर
छन छन मन्दिरों की घण्टियाँ, भरने लगी प्रीत गागर

प्रकृति की रमणीकता

रमणीकता प्रकृति की कितनी देखिये ममतामयी
सकल सौन्दर्य समेटे हृदय समीप यह आत्म-मयी
यहाँ उषा किरणें बिखेरती दुग्ध सा वात्सल्य है
धुप-छांव का आँचल पसारते मेघ चापल्य है

सहोदरा बन बांधे राखी ये स्निग्ध रवि रश्मियाँ
प्रफुल्लित हृदय पर तैर रही मुग्ध नीरज पंक्तियाँ
अविरल झर-झर झरता जल संसृत जलधार श्रोत है
विहंगम प्रकृति दृश्य प्रेम से उर तक ओत-पोत है

देख प्रकृति दृश्य हृदय प्रेम पीयूष सरिता बह रही
मकरन्द पान कर भ्रमर गुंजन स्पंदित कर कह रही
तृषित सिंधु भी हुआ शांत कर पान सुर तरिंगिनी जल
तरु तुलिका से मृदु आकृतियाँ धरा पर रचित निर्मल

चंचल चंद्र-प्रभा विभावरी संग नभ पर सुशोभित है
सृष्टि रचियेता की इस रचना से चित्त पुलकित है
शीतल समीर के मंद झकोरों से अवनी सुरभित है
झंकृत वीणा के तारों सी यह कविता मुखरित है

हरित वसुंधरा, सुरभित करते सुमन, चहक विहग की
धरा गगन का मिलन क्षितिज पर मद कुंचाले मृग की
गगन स्पर्श करती शिखाओं को चिरती ये अरुणिमा
चित्रकार ने रची मानस-पटल पर व्योम-लालिमा

ग्रीष्म ऋतु के विभिन्न दृश्य

भानु का प्रचंड आतप धरा विचलित कर रहा
अनिल अनल वेग कंठ को तृषित कर रहा
ताल तलैया शोषित उद्दत तन जलाने को
मिले वृक्ष छाँव या जल तृष्णा मिटाने को

प्यास से आकुल काग देखो भिगो रहा मुख रे
पा जल तप्त धरा को दे मात पा रहा सुख रे
ग्रीष्म की ऋतु है आई सूर्य ताप तप रहा मन
क्लांत तन मन रे कलापी मत तप भुला दुःख रे

जल जल कर जल लाती देखो वो ग्राम बाला
दुर्भिक्ष का प्रकोप हो या हो जीवन ज्वाला
सतत चलते रहना थकते न रहना उद्देश्य
मृगमरीचिका सी चुभती नागफनी की माला

छलकते अश्रुजल, छलकती मनोदशा की
छलकती वेदना, बदलती देह दुर्दशा की
यात्रा शून्य से प्रारंभ शून्य में समावेश की
धीर गंभीर हृदय उठते पनपते आवेश की
प्रज्ञान आत्मा से परमात्मा के मिलन की
यह विश्रांति है यह ही शांति है जीवन की

समय बहुत कम है मेरे पास काम ज्यादा
बांध न ले नियति को प्रारब्ध की मर्यादा
जिजीविषा का संकल्प है प्रणिधान मेरा
प्रफुल्लित सस्मित जीवन अभिमान मेरा

अरुण जलज के आगमन

मनोरम धवल चन्द्र बिम्ब से, होती सज्जित मंजुषा
फेनिल लहरों में हो महि पर, प्रतिबिंबित चमकती उषा
विजन यामिनी के जीवन का, होता तमस अवसान भी
अरुण जलज के आगमन संग, हो रहा मंगल गान भी

शीतल तुहिन कणों से समुचित, वसुंधरा थी पटी हुई
क्षितिज़ के रक्ताभ आँचल पर, दृश्य रश्मियाँ डटी हुई
एक यवनिका हट जीवन पट, खोले नव अनुच्छेद है
नव प्रात के स्वागत में भूल, गयी विगत परिच्छेद है

एक मौन वेदना धरा पट, संसूचित पर एकाकी
प्रकृति कष्ट दोहन तोषण से, तीव्र आघात प्रत्याशी
सहती मात वसुंधरा नित्य, धैर्य सित प्रवीर असितता
जीवन निशि अंधकार हर, पृथ्वी न अधीर प्रतिकता

व्यूष-सुधा पान को प्रफुल्लित, आतुर स्पंदित मन हुआ
तृषित अवनि हृदय को संतृप्त, करता जल सिंचन हुआ
आशाएं तो रहीं पल्लवित, ऊंची द्रुम शाखाओं पर
धरा सा सहनशील बन चलो, कठोर बाधाओं पर

पृथ्वी संवाहक पर्यावरण, पोषक सन्देश प्रेषक
जल महि वन हर्षित संरक्षित, कोरोना अरि उपदेशक
दृष्टि प्रकृति के प्रति बदली है, जागृत हुआ जमाना है
हरी भरी वसुंधरा महके, दृग को लगे सुहाना है

हैं जलचर वनचर हर्षाये, प्रफुल्लित लौट आये हैं
चित्रकार के चित्र सा बना, गिरि कानन मुस्काये हैं
घाट घाट का नीर स्फटिक सा, समीर मस्त रवानी है
नील मेघ अम्बर दिखा रहा, मेघ धनु दृग सुहानी है

अरुणिमा

यह अरुणिमा, यह क्षितिज की लालिमा, है आनंद प्रवास में।
प्रफुल्लित तन का उत्कर्ष, रोमांचित मन, मचलता श्वास में॥
अरुष-पट से सज रही इला, जल सघन घन रहा निस्तब्ध सा।
द्रूमदल की पांत से मुखरित व्युष, सहभाव ज्यों उपलब्ध सा॥

चिन्ह परिणय का सजा कर, धानी चुनड़ी ओढ़ ऊषा चली।
मनुज मैं, मुझमें मनुज, मनुज के ही स्वभाव से मन को छली॥
अरुण-अस्फुट व्योम सरोज सम है अब, प्रीति सुरभित हो चली।
निहित कर संतुष्टि सम्यक, देख प्रकृति सृजन-अंकुर बो चली॥

आतप प्रीत अभिव्यक्ति, स्वप्न सिंधु जागृत गीत अनुप्रास सा।
वारिद सन्देश, प्रेषित राग, झंकृत अंतस में उल्लास सा॥
अनन्यता है उत्कर्ष में, मिलन हर्ष में, मधु अभिलाष सा।
जलधिजल पर मनोहर, मोहक छवि किरणों का, भ्रूविलास सा॥

लोहित हुआ वारिद

कंपित हुई अवनी लोहित व्योम हुआ वारिद अश्रु बह उठे कंपित तन हुआ
वसुंधरा की सुन्दरत्तम चित्रकला का देखो कैसा क्रूरत्तम पतन हुआ
हिम-खंड-खंड हुआ, तांडव प्रचंड हुआ, नगपति प्रदेश का कैसा शमन हुआ
शम्भू विराजते जहाँ, वहाँ बारम्बार कम्पन हुआ, वसुधा का विघटन हुआ।

देखो वे श्वेत विहगगण उड़ हिमत्रुंग से, देख रहे प्राकृतिक आपदा को
जहाँ कुपित प्रलयंकर बजा रहे डमरू नष्ट करने हेतु गिरी संपदा को
तड़प तड़प पाखी नयन नीर बहा रहे, आयी कैसी भीषण विभीषिका है
पक्षी तो वेदना पहचानते, पक्षी ही जाने जीवन मृग मरीचिका है।

तड तड तड तडितावली तटक रही, लोहित अम्बर भी था
मेघ गर्जन अति रोषित, अमर्ष हुआ प्रयलंकर भी था
कुपित शिव शंकर भी था, जंगम हुआ क्यूँ स्थावर भी था
भुतसमप्लव निमज्जन आर्तनाद त्राहिमाम स्वर भी था॥

मेरे शब्द लक्षणा, उनके भ्रमित बरस रहे व्यंजना
आपातकाल महाद्भय राजनीति की दूषित गर्जना
आकुलित क्षत हत नर क्रोधित उनकी अभिव्यंजना
नमन वीर सैन्य दल जिसने आ-आलंबन दिया अपना॥

मास एक बीत गए श्वेत घाटी प्रकृति को कोस रही
देवधरा पर दैविक ताप आया क्या अपना दोष नहीं
सृष्टि के निर्माता ने सृष्टि रची अवलोकन के लिए
हो स्वच्छन्द मानव मान बैठा प्रकृति है दोहन के लिए॥

भगवान शिव आशुतोष हैं, उनकी स्तुति शीघ्र ही कल्याण करती है। उत्तराखंड की स्थिति शीघ्र ठीक हो, शिव कुपित हैं तो प्रसन्न हों। एक स्तुति त्रिभंगी छंद में :-

नमामि प्रलयंकर, नमामि शंकर, हे नाथ विध्वंसकारी।
हे प्रभु मृत्युंजय, हे शिव निर्भय, हे गंगाधर हित कारी।
मृत्यु के प्रदाता, जीवन दाता, रक्षा हो नाथ त्र्यम्बकम।
नमामि कैलासा, बुद्धि विकासा, आशुतोष रक्षम रक्षम॥

धरेंद्र नंदिनीस्य, गंग त्रिजटास्य, शोभितम भुजंग पिंगले।
तांडव प्रताडीतम, चन्द्र शेखरम, दग्ध कराल भाल कपिले।
हिम खंड दंडितम, प्रकृति विघटनम, प्रचंड गंगा प्रवाहिते।
केदार रक्षिते, तांडव रचिते, सदा शिवम् भजिते भजिते॥

वर्षा ॠतु

द्रुमदलों पर जलकण का नर्तन, ज्यूँ मुरलीधर का वादन
मेघों का घन घन गर्जन, चपल चपल चपला का निष्पादन
शुष्क सरिता का नव संचार भरण, नूतन जल का आप्लवन
वाह रे ॠतु पावस, प्रकृति भी सस्मित हो करे अभिवादन।

शीतल स्निग्ध पावन वारि फुहार झकझोरने लगी तन है
लग रहा अब आनेवाला रिमझिम करता मास सावन है
ये चपल बादल, सूरज की किरणों से खेल रचा रहे हैं
मन को भी आल्हादित करने को इन्द्रधनुष बना रहे हैं।

नूतन विहान

अब नूतन विहान हुआ चाहता है
नव वर्ष का भान हुआ चाहता है
कर अब समाप्त अनंत अभिलाषाएँ
क्षरित हों जाएं अपूर्ण कामनाएँ
आओ शुभ मंगल गायें हम
नव जीवन कलश सजाएं हम

आदित्य निकेत का गगन गौरव है
पुष्पित कुंज लता मंडित सौरभ है
तुषार पल्लव पल्लव आच्छादित है
प्रीत पीयूष सरित मन आलोड़ित है
अन्तःस्थल से भगायें तम
नयन प्रीत से हो जाएं नम

हे पालक विश्वरूप सृष्टि रचियता
समष्टि के निर्माता धृति संचयिता
काल के पोषक रूपक अधिष्ठाता
नमन तुझे वंदन तुझे हे विधाता
नूतन सृष्टि को रचायें हम
नूतन सोच यहाँ लाएं हम

स्वागत आशा सिंचित नवल वर्ष का
स्नेह पूर्ण भावनाओं के हर्ष का
आओ भूलें कल्मष गए वर्ष का
बीत चला जो क्षण सघन संघर्ष का
सुनहरा भविष्य सजाएं हम
आओ शुभ मंगल गायें हम

अरुणोदय

चीर व्योम अंतस आ रही हैं नव रवि-रश्मियाँ

अरुणोदित नव भोर है उत्सव है सज़ा सज़ा
आशाओं का उदय और तिमिर है भगा भगा
उमंग आल्हाद का लाती आरव रवि-रश्मियाँ
चीर व्योम अंतस आ रही हैं नव रवि-रश्मियाँ

गत वर्ष की भूल कर रीति बात नव वर्ष आया
आनंदित प्रफुल्लित उन्मुदित मन को हर्षाया
सागर तट पर हेम कण का वैभव रवि-रश्मियाँ
चीर व्योम अंतस आ रही हैं नव रवि-रश्मियाँ

पूर्ण होंगी अपूर्ण आशा मन संकल्प है आज
लक्ष्य संधान होगा नव वर्ष प्रकल्प है आज
जीवन उजास कर रही हैं आर्जव रवि-रश्मियाँ
चीर व्योम अंतस आ रही हैं नव रवि-रश्मियाँ

नव चेतस नव उजास नव कल्पनाएं नव वर्ष
छोड़ कल्मषता कटुता उमंग लाया नव वर्ष
संस्कारित ज्योति अंतस प्राभव नव रवि रश्मियां
चीर व्योम अंतस आ रही हैं नव रवि-रश्मियाँ

होली

जब लगे पांव नर्तन करने, मन गाये मल्हार
पीली पीली सरसों फूटे, सुरभित शीत बयार
तन बदन मादक हिलोर उठे, छाए मस्त बहार
फागुन आया समझ झुम के, सुंदर हो संसार

मीठी मीठी बतियाँ बोले, मीठी मीठी रात
साजन की बहियाँ पुकारती, सर्द पड़े जज्बात
दूर गगन कुहूकता पाखी, ढूंढ़े अपना प्यार
साजन जब घर आये हों तब, सुंदर हो संसार

चकमक चमके चांदनी गगन, तारों की बारात
चन्दा चकोर टुकटुक देखे, विरह अश्रु बरसात
हिय ठंडक आन पड़े प्रियतम, देखूँ बारम्बार
मदमाती खुशबू तेरी पा, सुंदर हो संसार

श्रृंगार

पावस में प्रेयषि

सतरंगी रोहित करे मोहित सखी देख धरा पावस आया
श्याम सुदामन गर्जित गगन उद्वेलित मन बदन ठावस लाया
अंतस परिमल प्रेयसी विकल मेघदूत ने संदेश पठाया
वारिद्पाश कसक, गह स्नेह भरसक, चपल चपला वेश बनाया

घने घन घन व्योम में आतिथ्य स्वीकारते देखो हे सजनी
पुलकित हुलसित वसुंधरा के अंग अंग सुहरित शीत रंजनी
नम भींगी अलकें कर्षण तर्पण तडित्पति को समर्पित अवनी
लिए सजल लोचन उत्कंठित विरहणी सा मन चुभे नागफनी

अम्बुद जल बरस बरस कहे नवगीत नस नस बहे तडितावली
शीतल मेघ बूंदें श्वास में उन्माद भरती ज्यूँ पुष्पावली
लस रंजन की रागिनी मन मीत संगीत संग-संग बज रही
शिथिल वेणी हुई पावस की मादक ताल अंग-अंग सज रही

यह पावस रात्रि है साधक वृष्टि ज्ञान घन मनस भाव की सरिता
तडित अधृति मेरी, इष्ट-अभिगम भाव सृष्टि ले आई ईशिता
ज्यूँ लीन होता जीव प्रणिधान में चली मैं सदृस शांत निशिता
झंझा मुक्ति हुई चेतता हुआ मन मानो समुच्चय तन गर्विता

प्रिये आप विधु

प्रिये आप विधु प्रीत गगन की, मैं रश्मिपुंज परिभाषित
स्वप्निल बातें अलस नयन की, स्वप्न सत्य मैं परिलक्षित
अधर मधु घट लिए आया करूँ प्रणय मद पान
स्मृति विह्वल हिय प्रसन्न करती तिरती मधु मुस्कान

सर्वहित स्मरण प्रणय निशा का, झँपती व्रीडामय पलकें
उत्कंठित सी गतिमय उर की, ढंकती कोमल गहन अलकें
मद गयंद मादक नखराली, कल्पित भोग विलास
गुंजित सी कवितावली तड़ित, रति रंजन उल्लास

इड़ा द्वार बसंत आल्हादित, अनंग प्रांजल विभोर सा
ऋतुराज समर्पित अंग अंग, मन नर्तन चित्तचोर सा
पद नूपुर ध्वनि झंकृत हिय तो, मन बसता अनुराग
हृदय नेह उमंग परिपूरित, गाये ललित विहाग

इंद्रधनुषी स्मृतियाँ

आज इंद्रधनुषी स्मृतियां मन में सज आयी हैं
आज शशिप्रभा ला रजनी ने आस बढ़ाई है
आज सुनहरी यादें आ क्षितिज से टकराई हैं
उठा तिमिर के वितान तब आशाएं आयी हैं

अम्बर स्पंदित, हृदय स्पंदित, तन स्पंदित हो रहा
कनक रश्मियों का निस्पंदन प्रभावित हो रहा
हो रहा अंबर स्पंदित, हृदय स्पंदित, तन स्पंदित
निस्पंदित कनक-रश्मियाँ अंतस पर अब छा रही
गर्वित तरंगों से सहती ये झंझावातों के आघात
श्वास श्वास पर कामनाएं पुनः पुनः मुरझा रही।

नव आशाओं, नव कामनाओं को प्रस्फुरित करने
कौन मधुप की गुंजन मध्य परिमल बिखराएगा
कौन अब चन्द्र-किरणों सा शीतल हुआ छाएगा
स्पंदित अम्बर से स्नेह-शुभ्र मेघ को बरसायेगा।

प्रेम समर्पण

सद्य स्नात प्रभा धवल रूप, त्रिविष्टप सी अधृति लुनाई
ऋतुसंहार की छह ऋतुएं, जीवन में बन तुम समाई
सामवेद गीतिका मृदु स्वर, जीवन प्रकोष्ट अंगड़ाई
उपहार प्रिय स्वीकार करो, चक्षु जल लाया सुखदाई

अनंतकाल का संवेदन, शनैः शनैः दे सरम्भण
ईशिता परि श्रमित जीविका, तू ही जीवन आलंबन
नेह अर्गलायें निबिड़ पट, अद्भुत प्रीत खुली पराई
उपहार प्रिय स्वीकार करो, चक्षु जल लाया सुखदाई

इषितत्वता उच्च शिखर पर, प्रीत बन्धन विवाह ईडा
स्फूर्ति अनुभूति जीवनकाल, पीयूष रंजन की क्रीड़ा
मधुमय हो मंगल हो प्राध्व, अभिसिंचित नवल तरुणाई
उपहार प्रिय स्वीकार करो, चक्षु जल लाया सुखदाई

वय अमृत बेला अधोमुखी, अमिय पान कण्ठ अनुपम हो
संचय करूँ नित नयन निधि, हृदय अभिसारित नूतन हो
जर आप्त जीर्ण देह सहते, सस्मित आनन नहीं झाई
उपहार प्रिय स्वीकार करो, चक्षु जल लाया सुखदाई

आतप के मध्यांतर में

आतप के मध्यांतर में तुम, भानु खर किरण कोष
मैं युवा यामिनी की चंचल, शितानिल सुरभि प्रदोष
तुम कोदंड की प्रत्यंचा सी, लरजती हुई टंकार
मैं सरसिज की मुस्कान युक्त, किसलय नूतन बहार

देवलोक की कांत कामिनी, सुर सिद्धि कविता शान्त
मैं चंचल गति लहराती सी, उर सौम्य सरिता भ्रांत
मैं मुरली धर के अधर बजी, तरंगित सुमधुर वेणु
तुम उड़ नयन शूल बनती हो, ब्रज धाम पथ की रेणु

अहं ब्रह्मास्मि विरोचन संग, सच्चिदानंद प्रमेय
चिदाकाश नव अनुभूति लिए, ईश परम सत्य ध्येय
तुम नंदन वन गहन विटप सी, मैं सुख कर्ता समीर
कालिंदी तट कदम्बन डार, पिक की कूक गम्भीर

संसृति के आगमन की झलक, प्रलय की ईडा द्वार
हिमाद्रि तुंग श्रृंग सी विराट, घटाटोप अंधकार
सखी मैं निशीथ की राग हूँ, तुम व्यर्थ हो मल्हार
मैं श्रृंगार अलंकृत कविता, तुम पिय को मिली हार

लस रंजन की रागिनी मधुर, अभिरत निरत प्रणिधान
हृदय पीयूष बजती झंकृत, पावन शिंजनी गान
अधिकृत राज नर्तकी की ले, छनछन करती गुँजार
हृदय उद्गम की स्निग्ध रेखा, परिकल्पनाओं की धार

स्नेह समर्पण

सपने मदिर मधुर खोल रहे, हृदय की अर्गलायें
ले स्निग्ध गगन पर निशा हार, शुभ्र ज्योति मुस्काये ॥

बढ़ रहा देख आगे जीवन, हम करें लक्ष्य प्राप्त
संग तुम्हारा मिल गया मुझे, ले जग अपने हाथ
तैर रहा अतीत नयनों में, सुख दुख की ले याद
हृदय छुपी आशाएं गहरी, मिटे सभी अवसाद

मिलाप तेरा मेरा कहता, साथ जियें मर जाएँ
सपने मदिर मधुर खोल रहे, हृदय की अर्गलायें ॥

मधुर मिलन मधुरा आलिंगन, मधुर अधर रसपान
श्वास प्रिये तेरी मधुर मदिर, निशा हुई सुखखान
अनुराग प्रीत प्रांगन छाया, चहुँ ओर अति उमंग
रजनी संग निशित नील गगन, पा प्रिय तेरा संग

जला दीप शिखा प्रीत स्नेहिल, नव प्रभा जगमगायें
सपने मदिर मधुर खोल रहे, हृदय की अर्गलायें ॥

माणक कांचन अभिव्यक्ति तू, प्रगति शांति उद्वेग
अरुणिमा सी क्षितिज पर झंझा, मचलती मनोवेग
आरोहण अनुभूति स्वर्ग की, हिरनी सी ले लोच
पथ कंटक सुमन बिछा कोमल, उन्नत करती सोच

हाथ दे हाथ में तू लाती, नव रूप कल्पनाएँ
सपने मदिर मधुर खोल रहे, हृदय की अर्गलायें॥

नव छंद नव गीत बन आई, तकलीफें लीं बाँट
काँटों से मुक्त हुआ जीवन, शूल लिए सब छांट
हटाया कुमुदिनी बन कीचक, ये खाई दी पाट
इक दूजे के पूरक बन कर, हम सफ़र रहे काट

आलज़्बन तुम मेरा अब हो, बनी पुनीत ऋचाएं
सपने मदिर मधुर खोल रहे, हृदय की अर्गलायें॥

मंदिर झंकार हो तुम

हमारे प्यार की अनुपम, मंदिर झंकार तुम ही हो
ना तुझको भूल पाऊँगा, हृदय के तार तुम ही हो।।

तेरा स्थान जीवन में, मेरे दिल से बँधा नाता
हमारे हृदय की धड़कन, के अद्भुत सार तुम ही हो।।

तुम्हें पाया अलौकिक निधि, सँवारा नेह से अपने
बसाया अपने तन मन में, दृग ज्योति भास तुम ही हो।।

मेरे सपनों के सरगम में, अनोखा रूप जो दिखता
सजाता अपने जीवन में, वही अहसास तुम ही हो।।

रची जो व्यास ने गीता, अगम शब्दों की परिभाषा
सृजन के छन्द किसलय में, भरे मधुमास तुम ही हो।।

जहाँ पावन ऋचाओं की, मधुर ध्वनि गूँजती रहती
बजे मंदिर की ज्यों घंटी, वही टंकार तुम ही हो।।

हृदय के इन निकुंजों में, युगों से तुम प्रतीक्षित थी
खिले जो पुष्प अति दुर्लभ, भँवर गुंजार तुम ही हो।।

सुरभित फूलों की खुशबू, महकती देह आलोड़ित
तरंग अनंग शोर मचा, जीवन पुकार तुम ही हो।।

भ्रमर के गुंजन

भ्रमरों के गुंजन से गुंजित तेरे स्वर
मधु-स्वरों को शब्दों में परिवर्तित कर
तू गाती है दिल की कली पर मधुर गीतांजलि
तेरी बातें भाषित करती कवि की काव्यांजलि

रुकी रुकी स्वांसों का अतिक्रमण कर तू
प्रणय-पीयूष मकरंद समर्पण कर तू
हृदयांगीत करती जीवन ज्योत गति स्वरांजलि
झंकृत हुई आज तर्पण करती ये हृदयावलि

मेघदूत की संदेश प्रतीक पताका
शाकुंतलम की अज्ञ काम वाण श्लाखा
शरद नील व्योम पर चंचल उर्मित तड़ितावली
तू देवि पुष्पांजलि, तू प्रांजलि, तू प्राणांजली

प्रिय ये रूप राशि

प्रिय ये रूप राशि और बाँहों के घेरे
वक्ष पर झूमें सर्पनी से केश घनेरे
सिमट आया सावन समूचा इनमें तेरे
झर झर झरते मोती से तुषार कण अंगे

आभामंडल द्युति सा दमके वयुष्टि काल
जल रंजित स्निग्ध देह भासित केश कराल
केशपाश बाहुपाश पूरित न अंतस ताल
थर थर काँपे तन सिरहन लगायें उमंगे

धो आई हो लट व्योम-गंगा मे कल रात
प्रातः मुक्तामणि जल बूँदें हुई मुख निपात
स्पंदित देह है अनंग अनल से ज्ञात ज्ञात
तुहि मेरी मोह कामना मेरी सर्वंगे